Jagran

JCTB
JAGRAN COFFEE TABLE BOOK

अतुल्य विंध्यवासिनी

प्रस्तावना

शैलेश गुप्ता

जागरण प्रकाशन हमेशा ही समाज के चौतरफा विकास के लिए कुछ नया करने में विश्वास करता रहा है। इसके तहत ही दैनिक जागरण समूह की ओर से जागरण कॉफी टेबल बुक (जेसीटीबी) का प्रकाशन किया जाता रहा है। इसी क्रम में जेसीटीबी की ओर से उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद में आने वाले त्रिलोक पूज्य विंध्याचल धाम पर इस किताब का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस किताब के माध्यम से मीरजापुर सहित मीरजापुर मंडल के अंतर्गत आने वाले सभी पूज्यनीय एवं दर्शनीय स्थलों की महिमा का बखान किया गया है। विंध्य क्षेत्र की महिमा को दुनिया के सामने लाने के लिए इस बार जेसीटीबी के तहत यह पहली हिंदी भाषीय पुस्तक की रचना की गई है। इसमें विंध्याचल धाम में आने वाले सभी मंदिरों, आश्रमों व घाटों आदि का विस्तार से विवरण करने के साथ ही इस क्षेत्र में सैलानियों का मन मोहने वाले सभी जल प्रपातों व पौराणिक व ऐतिहासिक जगहों की व्याख्या की गई है।

जनपद के मानचित्र के अनुरूप ही इस पुस्तक में सभी स्थानों के बारे में विस्तार से बताया गया है। जागरण समूह हमेशा से ही इस बात को प्रोत्साहन देता रहा है कि उत्तर प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपार संभावनाएं हैं। ऐसे में विंध्य क्षेत्र और उसके आस–पास के ऐतिहासिक व पौराणिक स्थानों के बारे में पर्यटकों को ज्यादा जानकारी मुहैया कराकर इस जनपद में पर्यटन की संभावना को बढ़ाया जा सकता है।

भारत देश के केंद्र बिंदु पर स्थित विंध्याचल धाम को प्रकृति ने अपनी तमाम खासियतों से नवाजा है। यहां दर्जनों झरने निरंतर अपने कलकल करते जल के शोर से सैलानियों का मन मोहते रहते हैं। वाराणसी से चंद घंटे की दूरी पर स्थित इस जनपद के बारे में जितनी उपलब्धि बताई जाए वह कम है। हालांकि, इस किताब में जनपद के अतिसुंदर स्वरूप को विस्तार से बताने की कोशिश की गई है। रोचक तस्वीरों और तथ्यों के आधार पर पुस्तक की रचना की गई है। मीरजापुर मंडल के सभी धार्मिक और प्राचीन धरोहरों को इस रचना में समाहति करके पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है।

यही नहीं, इस पुस्तक में मीरजापुर जनपद के ऐतिहासिक महत्वों को समझाने के लिए यहां के प्राचीन किलों व नवीन आश्रमों आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। अपने लाल पत्थर की खूबियों के लिए देशभर में मशहूर इस प्राचीन नगरी का उल्लेख पुराणों आदि में भी किया गया है। वहीं, इस क्षेत्र में 150 करोड़ वर्ष पुराने फॉसिल्स् को देखने के लिए तो विदेशों से भी वैज्ञानिकों का दल आता रहता है। मीरजापुर अंचल में प्राकृतिक उपहारों के ऐसे ही अनगिनत स्थानों को दुनिया के सामने लाने के लिए जागरण समूह का यह प्रयास है। साथ ही, जागरण समूह अपने पाठकों से यह भी वादा करता है कि वह जेसीटीबी के माध्यम से प्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कदम निरंतर उठाता रहेगा।

क्रेडिट्स

डायरेक्टर मार्केटिंग	शैलेश गुप्ता
प्रोजेक्ट हेड	आलोक सांवल
कॉन्टेंट हेड	शर्मिष्ठा शर्मा
कॉन्टेंट कोर्डिनेटर	बेनुल तोमर
ऑथर	नीरज तिवारी
कॉन्सेप्ट एंड विजन	मनीष तिवारी
मार्केटिंग कोर्डिनेटर	संदीप शर्मा मार्कण्डेय सिंह मुन्ना लाल यादव
क्रिएटिव कांसेप्ट	वर्मिलियन
पब्लिसिटी एंड प्रमोशन	सिद्धार्थ बिस्वास इंद्रजीत सिंह
डिस्ट्रीब्यूशन	प्रदीप पंत नवीन कुमार
एक्सपर्ट	प्रो. राममोहन पाठक (भूतपूर्व डीन एवं डायरेक्टर मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, काशी विद्यापीठ यूनिवर्सिटी.सम्मानित :– यश भारती, विष्णुराव पराड़कर पुरस्कार, पत्रकारिता भूषण, शिक्षक श्री, भारतेंदु पुरस्कार)
प्रकाशन	जागरण प्रकाशन लिमिटेड 2, सर्वोदय नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश–208005 सर्वाधिकार सुरक्षित © 2017 जागरण प्रकाशन लिमिटेड

प्राक्कथन

उत्तर प्रदेश के विंध्याचल धाम के आंचल में ऐतिहासिक और पौराणिक स्थलों की भरमार है। पुराणों के पन्नों से लेकर विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों की रिपोर्ट्स में इनका तमाम जगहों पर जिक्र किया गया है। मीरजापुर जिले में मां विंध्यावासिनी मंदिर के समीप स्थित इन मनोरम स्थलों की महिमा का बखान करना गागर में सागर को भरने जैसा है।

विंध्याचल क्षेत्र को अब तक सिर्फ धार्मिक कारणों से ही जाना जाता रहा है। मगर इस किताब के माध्यम से सैलानियों को यहां की प्राकृतिक खूबसूरती का भी पता चल सकेगा। उम्मीद है कि मीरजापुर के जिलाधिकारी श्री विमल कुमार दुबे और मंडल आयुक्त मुरली मनोहर लाल की पहल पर लिखी गई इस पुस्तक को पढ़ने के बाद इस त्रिलोक पूज्य धाम की महिमा और प्रसिद्ध होगी। यह जनपद एक विशाल ऐतिहासिक पहचान को खुद में समेटे हुए है। पौराणिक महत्व से देखें तो यह जनपद त्रिलोक पूज्य माना गया है। शिव की पावन नगरी वाराणसी से कुछ घंटे की दूरी पर स्थित मीरजापुर जनपद धार्मिक और वैज्ञानिक दोनों ही महत्वों को खुद में समेटे हुए है।

वहीं, औद्योगिक नजरिये से देखा जाए तो यहां का लाल पत्थर, पीतल के बर्तन और कालीन तो देशभर में पसंद किए ही जाते हैं। देश में कई जगहों पर चुनार के पत्थरों की काफी मांग रहती है। यहां का एक बहुत बड़ा वर्ग पीतल की कारीगरी पर ही अपना जीवनयापन करता है। यहां उन्हें कसेरा समुदाय का कहा जाता है। कसेरा समुदाय पीतल के बर्तनों को अपने हुनर से मनचाहा आकार देकर आज मीरजापुर जनपद का नाम देश–विदेश में रोशन कर रहा है। वहीं, कालीन निर्माण के उद्योग से जुड़े मीरजापुर के हुनरमंदों ने तो अपनी खूबी से प्रदेश और देश ही नहीं विदेश तक में अपने काम का परचम लहरा दिया है।

इतनी सारी खूबियों को अपनी विशाल सीमाओं में समेटकर रखने वाले मीरजापुर जनपद को इस किताब के जरिए सैलानियों और माता के भक्तों के सामने रोचक तरीके से पेश करने की कोशिश की गई है। उम्मीद है कि इस किताब के जरिए मीरजापुर का सम्पूर्ण उल्लेख पाकर लोगों को हैरानी हो जाएगी। यहां की पवित्रता का ही नतीजा है कि यहां भगवान राम ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान किया था। रामगया घाट के नाम से जाना जाने वाला वह स्थल भक्तों के लिए दर्शनीय और पूज्यनीय है। यहां के प्रत्येक मंदिर का कोई न कोई पौराणिक महत्व है। यह पुस्तक ऐसे सभी तथ्यों का विस्तार से वर्णन अपने पाठकों के समक्ष करने के लिए रची गई है।

गंगा के तट पर स्थित इस जनपद के लोगों के लिए गंगा की जलधारा उनके जीवन का हिस्सा है। दर्जनों झरनों के शोर से रोमांचित रहने वाले इस जिले की खूबी को वैज्ञानिक भी परख ही रहे हैं। यहां की मिट्टी तक में औषधीय गुणों का खजाना पाया गया है। विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधानों में इसकी पुष्टि की गई है कि यहां की जलधारा में ऐसे कई तत्व मिले हुए हैं जो हमारे शरीर को रोगमुक्त रखने में काफी मददगार साबित हुए हैं। यही कारण है कि दूर–दूर से यहां आने वाले सैलानी यहां का पानी पीकर खुद को तरोताजा महसूस करते हैं। वे झरने और पहाड़ों से रिस्ते पानी को पीकर खुद को रोगमुक्त पाते हैं। यकीनन, मीरजापुर की इन खूबियों के पीछे इसके धार्मिक महत्व का विशेष योगदान है। वहीं, भौगोलिक दृष्टि से भी विंध्य क्षेत्र की महिमा अपार है। यह क्षेत्र भारतवर्ष का केंद्र बिंदु है। वैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य पर मुहर लगाया है।

gekjs QkWVkxzkQj

vrgy gqMw y[kuÅ fLFkr d,yst v,Q vkV ,M Øk¶V I IsekLVj v,Q Qkbu vkV I djusokysvrgy gqMwdsikl crkj QkVkxzkQd dykdkj 15 IsT;knk o"kkadk vuqHko g mudh IcIs[kkI fo'ks"krk tufyfLVd QkVkxzkQh g mUgkus u,Fk bfM;k dsdb çeq[k U;wt isi I vkj çfrf"Br ehfM;k gkmIsI eadke fd;k g og cgq IsçfrfBr çkstDV I dk fgLIk Hkh jgsga

vrgy viuh miyf/k;kadsihNsviusxq# varjk"Vh; [;kfr dsQkVkxzkQj Loxh; ihIh fyfVy dk vk'khokn ekursga mudh Vsux usgh vrgy dksQkVkxzkQh dh fofHkUu fo/kkvkaQ'ku] ç,MDV] LikV I vkj fotqvy vkV I vkfn ds IkFk d,ef'k;y rFkk ykbQLVkby 'kV ea ,d vyx igpku fnykb' dfj;j dh 'kq vkr vrgy us 2010 ea ,d Vhoy QkVkxzkQj dsrkj ij dh ckn eatkxj.k d,Qh Vcy cqd I dsQel o,Y;w 'noky;Ó dsfy, mUgkusmÙkj çns'k] fcgkj] mÙkjk[kM vkj >kj[kM tIspkj jkT;kaeamYys[kuh; QkVks'kV fd;k mUgkustkxj.k d,Qh Vcy cqd Ifj t dh 12 IsT;knk o,Y;w dsfy, ,d egRoiwk fgLIsdsrkj ij dke dj mIsIQyrk fnykuseaegRoiwk Hkwfedk Hkh vnk dh

,d QkVks tufyLV dsrkj ij dke djrsgq vrgy gqMwfMft Vy VsDud vkj viusfØ,fVo vçkp dscgrjhu IeUo; IkFk ,d u;sfo/kk dsvxnw cu pqdsga mudk od dbusku vkj bVjusku ,fXtfc'ku dk fgLIk Hkh jgk g og viuscgrjhu QkVkxzk¶I ds IkFk nks Ikyks ,fXtfc'ku vkj rhu xq ,fXtfc'ku Hkh vk;ktr dj pqdsga vrgy dks le;≤ ij fofHkUu IkFkkvkaeaxLV yDpjj dsrkj ij vkef=r fd;k tkrk g vkj og [kq Hkh mHkjrs QkVkxzkQI dsfy, QkVkxzkQh od'k,i vk;ktr djrsjgrsga

विषय सूची

1. श्रद्धा में सराबोर
2. त्रिकोण यात्रा
3. पंचकोसी यात्रा
4. शांत और एकांत
5. कलकल करती जलधारा
6. घुमक्कड़ी लोक
7. उम्दा कारीगरी
8. पूर्ण संतृप्ति

J¼k eal jkcksj---

गंगा किनारे बसे उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद में प्रकृति की अनोखी छंटा देखने को मिलती है। त्रिलोक पूज्य माता विंध्यवासिनी के आंचल में बसा यह शहर पौराणिक और ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजे हुए है। यहां श्रद्धालुओं और सैलानियों दोनों के मन को शांति मिलती है। भारत के केंद्र बिंदु पर विराजमान विंध्य क्षेत्र की महिमा का बखान करना हिंदुत्व की व्याख्या करने के समान है...

विशाल चुनार किले के पीछे बहती
गंगा नदी को पार करने के लिए
बनाया गया जनपद का एकमात्र पीपे वाला पुल।
यहां सैलानी नौकाविहार के साथ ही
गंगा स्नान का भी लुत्फ उठाते हैं।

मां विंध्यवासिनी की श्रृंगार की हुई मूर्ति।

विंध्याचल माता का दरबार

विंध्य पर्वत पर विराजमान विंध्याचल मां की महिमा का बखान करना धार्मिक ग्रंथों का पाठ करने के समान है। विंध्य पर्वत पर पांव रखते ही शांति की अनुभूति होती है। मां विंध्यवासिनी के धाम को महाशक्तिपीठ एवं सिद्धपीठ के रूप में भी जाना जाता है।

विंध्यवासिनी मंदिर मीरजापुर जनपद के मुख्यालय से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विंध्याचल धाम का जिक्र पुराणों व कई धार्मिक ग्रंथों में भी किया गया है। यहां वर्ष में दो बार शारदीय और वासंतिक नवरात्रि में विश्व विख्यात मेलों का आयोजन किया जाता है। साथ ही, मकर संक्रांति पर पूजन का विशेष आयोजन भी होता है। गंगा तट पर वर्षभर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। अतिरमणीय और दर्शनीय इन मंदिरों के पौराणिक महत्वों का धार्मिक ग्रंथों में विस्तार से उल्लेख किया गया है। मां विंध्यवासिनी की मूर्ति देखते ही मन में आस्था का सैलाब उमड़ने लगता है। विंध्य पर्वत पर विराजमान माता की आरती, पूजन, भोग, श्रृंगार एवं प्रसाद वितरण का रोज ही भव्य आयोजन यहां के पंडा समाज द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

विंध्याचल मंदिर के प्रांगण में चारों ओर विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियों को स्थापित किया गया है। माता विंध्यवासिनी दिव्य विग्रह पश्चिमाभिमुख अवस्थित हैं। इसी विंध्य धाम के समीप गंगा और विंध्य शैल का समागम हुआ है। यहां मां गंगा की कलकल करती जलधारा में शैल श्रृंग नजर आते हैं जो इस पावन क्षेत्र की महिमा को दूना कर देते हैं। यूं तो गंगा जी सर्वपूज्यनीय हैं लेकिन विंध्य क्षेत्र में गंगा की धारा में स्नान करने का विशेष महत्व माना गया है।

विंध्याचल माता के मंदिर के प्रांगण में स्थापित मां सरस्वती की मूर्ति।

विंध्याचल धाम परिसर में स्थापित दक्षिणमुखी हनुमानजी की मूर्ति।

विंध्य क्षेत्र में कोतवाली स्थित भैरव–भैरवी की भव्य मूर्ति।

विंध्याचल माता के प्रांगण में स्थापित मां काली की मनोहारी मूर्ति।

विंध्यवासिनी धाम में माता की सवारी स्वरूप की पूज्यनीय मूरत सिंह दर्शन।

विंध्य माता के प्रांगण में देवी महालक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा एवं कालीजी की मूर्ति भी स्थापित की गई है। इन्हीं देवियों का दर्शन करने को लघु त्रिकोण यात्रा कहा जाता है। यह मान्यता पौराणिक काल से चली आ रही है। यहां दर्शन करने के लिये आने वाले श्रद्धालु इन देवियों का पूजन कर खुद को कृतार्थ मानते हैं। मंदिर के ऊपर स्वर्ण पताका लगाई गई है जिसमें श्रीयंत्र बना हुआ है। इस पताका के दर्शन से मन अभिभूत हो जाता है। साथ ही, मंदिर परिसर में नौबतखाना है जहां मुगल बादशाह औरंगजेब ने एक विशाल शाही नगाड़ा भेंट किया था। मंदिर प्रांगण के पश्चिम में शिवलिंग को स्थापित किया गया है। प्रांगण में ही दक्षिणमुखी हनुमानजी की मूर्ति स्थापित की गई है। प्रांगण में पंचमुखी महादेव के साथ ही माता की सवारी यानी सिंह की भी भव्य मूर्ति स्थापित है। नारंगी रंग की इस मूर्ति में सिंह की छवि सजीव सी जान पड़ती है। विंध्य पर्वत पर विराजमान इन सभी देवी–देवताओं का दर्शन मन में शांति का संचार करता है।

विंध्य पर्वत पर नवरात्रि की महिमा

विंध्य पर्वत की शोभा यानी माता विंध्यवासिनी का पूजन करने के लिए नवरात्रि में भव्य आयोजन होता है। यह जानना आवश्यक है कि हिंदू धर्म में वर्ष में चार नवरात्रियों का वर्णन किया गया है। इनका पूज्यनीय आयोजन क्रमशः चैत्र, आषाढ़, आश्विन एवं माघ के माह में होता है। इनमें से शारदीय नवरात्रि को विशेष माना जाता है। विंध्य पर्वत पर चारों नवरात्रि में भक्तों की भीड़ जुटती है। देवी के उपासक इन चारों नवरात्रियों में माता का दर्शन एवं पूजन करने के लिए माता के दरबार में आते हैं। हालांकि, ज्यादातर भक्त चैत्र एवं आश्विन की नवरात्रि में विंध्य धाम में माता का आशीर्वाद पाने के लिये आते हैं।

माता की चारों आरतियों का महत्व

मां विंध्यवासिनी की आरती का भी विशेष आयोजन किया जाता है। यहां माता की चार तरह की आरती की जाती है। मान्यता के अनुसार, ब्रह्ममुहूर्त में प्रातः चार बजे मां की प्रथम मंगला आरती की जाती है। इसमें माता के बाल्यावस्था को पूजा जाता है। कहा जाता है कि इस आरती से भक्तों को धर्म की प्राप्ति होती है। इसके बाद दोपहर में बारह बजे मां की दूसरी आरती आयोजित की जाती है। इसे राजश्री आरती कहते हैं। इसमें माता के युवावस्था की अर्चना की जाती है। यहां के पंडा समाज के कथनानुसार, इस आरती से भक्तों को समृद्धि, अर्थ एवं वैभव की प्राप्ति होती है। तीसरी आरती का आयोजन शाम को सात बजे किया जाता है। इसमें माता के प्रौढ़ावस्था् का पूजन किया जाता है। मान्यता है कि इस आरती से श्रद्धालुओं को संतान की प्राप्ति होती है। अंत में माता की चौथी आरती रात साढ़े नौ बजे सम्पन्न होती है, जिसमें माता के वृद्धावस्था को पूजा जाता है। कहते हैं कि इस आरती में सम्मिलित होने से भक्तों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विंध्य पर्वत पर विराजमान पंचमुखी महादेव की पूजा अनिवार्य कही जाती है।

विंध्याचल मंदिर के ऊपर लगी श्रीयंत्र स्वर्ण पताका का मनोरम स्वरूप।

त्रिकोण यात्रा

पवित्र पाविनी मां गंगा के तट पर विराजमान माता विंध्यवासिनी के दर्शन मात्र से मन की संतृप्त हो जाता है। पौराणिक काल से चली आ रही त्रिकोण यात्रा को सम्पन्न करना तीर्थों का दर्शन करने जैसा है। मान्यता है कि विंध्य पर्वत की इस महत्वपूर्ण यात्रा के लिये देवता भी तरसते हैं। आइए विंध्याचल धाम के अनछुए पहलुओं का दर्शन कर मन को कृतार्थ करते हैं...

गंगातट पर बसे त्रिलोक पूज्य विंध्य क्षेत्र में
पूजन करना तीर्थों के दर्शन करने के समान है।

त्रिकोण यात्रा का पावन महत्व

पृथ्वी के केंद्र बिंदु पर विराजमान मां विंध्यवासिनी का पूजन करने के बाद त्रिकोण यात्रा किये बिना दर्शन अधूरा माना जाता है। त्रिकोण यात्रा का तीर्थों की यात्रा करने के समान व्यामख्यानि किया गया है। इस यात्रा के तहत विभिन्न मंदिरों एवं कुंडों का दर्शन करने की सलाह दी जाती है। इसमें निम्न् मंदिरों का बखान किया गया है...

त्रिकोण यात्रा के तहत गंगा स्नान, मां विंध्यवासिनी, शीतला मंदिर (पकरीतर), कोतवाली भैरव–भैरवी मंदिर, श्री हनुमानजी (बरतर), ग्रामदेवी शायरी, वनखंडी महादेव, बंधवा महाबीर, पातालपुरी हनुमानजी, करणगिरी बावली, काली खोह, भैरवजी (भूतनाथ), कामाख्या देवी, गणेशजी, गेरूवा तालाब, श्रीकृष्णाजी, मुक्तेश्वर महादेव (मोतिया तालाब), सीताकुंड, मां अष्टभुजा, भैरव कुंड, मछिंद्र कुंड, मंगला गौरी, रामेश्वरनाथ, तारादेवी, रामशिला, संकटा देवी, शीतला देवी, प्रत्यगीरा माता, निहुत महाबीर, चामुंडा देवी, बिंदेश्वर महादेव और मां विंध्यवासिनी धाम पर स्थित स्वर्ग पताका का दर्शन करने की परम्परा सदियों से चली आ रही है।

लघु त्रिकोण परिक्रमा में आने वाले दर्शनीय स्थल

मां विंध्यवासिनी के दर्शन करने के लिए आने वाले भक्तजन माता के तीनों स्वरूपों महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती की आराधना कर लघु त्रिकोण यात्रा को सम्पूर्ण करते हैं। माता के मंदिर के प्रांगण में स्थापित देवी–देवताओं की पूजा करने को भी त्रिकोण यात्रा के समतुल्य माना जाता है।

कालीखोह

कालीखोह में विश्व में खेचरी मुद्रा (आकाश की ओर मुख) में मुख किये माता की इकलौती मूर्ति स्थापित है। यह विंध्याचल धाम से करीब चार किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर स्थित है। विंध्य पर्वत पर मां काली के रूप में विराजमान इस मंदिर में सिद्धी के लिए काफी दूर से संन्यासियों का आना लगा रहता है। चारों ओर से जंगल से घिरे इस मंदिर की शोभा इसका रमणीय वातावरण है। मंदिर के पुजारी के कथनानुसार मान्यता है कि माता काली ने एक बार रक्तबीज नामक राक्षस का वध करने के लिए रौद्र रूप धारण किया था। चूंकि, रक्तबीज का जमीन पर रक्त गिरते ही उसके समान कई असुर जन्म ले लेते थे। ऐसे में माता ने जगत के उद्धार के लिए अपना मुख आसमान की ओर करके उसका सारा रक्त पी लिया। यही कारण है कि इस जगह पर माता की मूरत खेचरी मुद्रा में नजर आती है। यहां माह में एक बार भव्य भंडारे का आयोजन यहीं के पंडा समाज की ओर से किया जाता है। मंदिर के चारों ओर विभिन्न देवी–देवताओं की मूरत स्थापित है। यहां लोग मुंडन संस्कार के लिये और अपनी मन्नतें पूरी करने के लिये आते हैं।

काली खोह मंदिर का सुंदर नजारा।

काली खोह मंदिर परिसर स्थित सिंह मूर्ति।

काली खोह माता का मनोहारी श्रृंगार रूप।

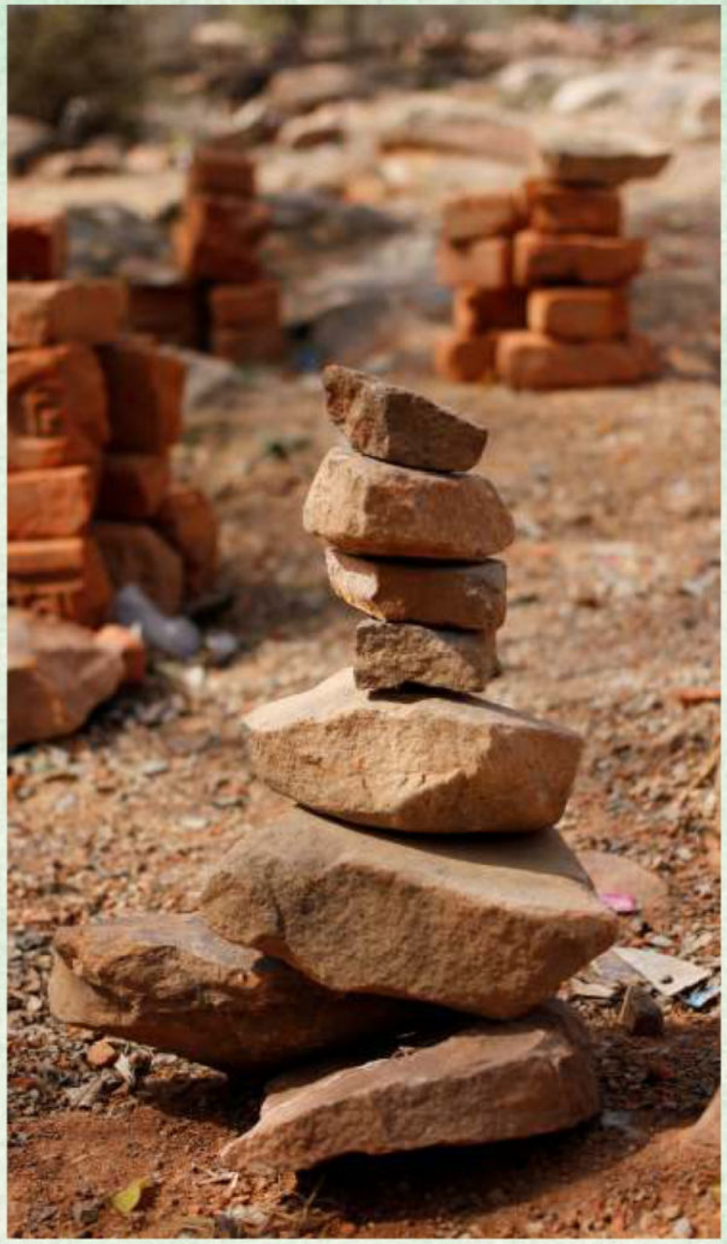

श्रद्धालुओं द्वारा बनाया गया घर का स्वरूप।

वहीं, 127 सीढ़ी चढ़कर मंदिर की ऊंचाई पर आने के बाद श्रद्धालु पत्थरों से घर का प्रतिरूप बनाते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से उन्हें अगले जन्म में भी घर की प्राप्ती होती है। यही कारण है कि विंध्य पर्वत पर जगह–जगह लाल पत्थरों से बनाए गए मकानों के प्रतिरूप पहली ही नजर में पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

नागकुंड का विशाल सीढ़ीनुमा दृश्य।

नाग कुंड

विंध्याचल धाम जाते समय लाल भैरव मंदिर के समीप ही विशिष्ट वास्तुकला का परिचय देते हुए एक कुंड का निर्माण कराया गया है। इसकी संरचना ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। शिवपुर गांव में स्थित इस सीढ़ीनुमा कुंड में राजस्थान में बनीं विभिन्न बांवलियों की झलक सी दिखती है। मान्यता है कि प्राचीन समय में दूर–दराज के क्षेत्रों से विंध्याचल धाम में माता के दर्शन करने के लिए आने वाले भक्त इसी कुंड से अपनी प्यास बुझाते थे। इस कुंड में स्नान करने से सर्प के काटे इंसान के जीवन की रक्षा होती है। इस बात का उल्लेख कुछ पुराणों में भी मिलता है। इस कुंड का निर्माण नागवंशी राजा दानव राज ने मुगल काल में करवाया था। कहा जाता है कि राजा की 52 रानियां थीं। उन्हीं के स्नान के लिए राजा ने इस कुंड का निर्माण कराया था। नवरात्रि में दूर–दूर से दर्शनार्थी इस कुंड के दर्शन के लिये आते हैं।

कजरहवा तालाब

विंध्याचल धाम से करीब छह किलोमीटर दूर पहाड़ी पर स्थित काली खोह माता के मंदिर की ओर जाते समय सबसे पहले बाएं हाथ पर एक बड़ा सा तालाब नजर आता है। इसके मध्य में एक स्तंभ भी गड़ा हुआ है। चारों ओर से सीढ़ीनुमा रास्ता बनाकर पर्यटकों के लिये यहां स्नान एवं ठहरने की व्यवस्था की गई है। चारों ओर से पेड़ों से घिरे इस तालाब का पानी काफी स्वच्छ है। यह तालाब करीब एक बीघा क्षेत्रफल में पत्थर से निर्मित है।

विंध्य पर्वत की शुरुआत में बना पौराणिक कजरहवा तालाब।

गेरूआ तालाब

त्रिकोण यात्रा में दूसरे बिंदु पर विराजमान महाकाली मंदिर से एक किलोमीटर की दूरी पर गेरूआ तालाब है। मान्यता है कि यहां पर भगवान श्रीकृष्ण विराजते हैं। यहां पर राधाजी के साथ श्रीकृष्ण रासलीला रचाते हैं। कहते हैं कि एक समय तक इस पानी में धोती आदि डुबोने पर वह गेरूआ रंग में तब्दील हो जाती थी। विंध्य धाम में इस तालाब की विशेष महत्ता है।

करीब पचास वर्ष पहले गेरूआ तालाब का पानी केसरिया रंग का होता था।

आस्था भरी डुबकी

गंगातट पर बसे पौराणिक शहर विंध्य क्षेत्र के
घाटों की सुबह और शाम मनोहारी होती है।
यहां आस्था का संतुष्टि से मिलन होता प्रतीत होता है।

सीताकुंड के दर्शन मात्र से मन में शीतलता मिल जाती है।

सीताकुंड पर स्थापित भगवान श्रीराम एवं सीता माता की मूर्ति। साथ ही, दुर्गा मां के भव्य स्वरूप का भी पूजन किया जाता है।

सीताकुंड

मीरजापुर जनपद में विंध्य क्षेत्र से करीब 15 मिनट की दूरी तय करने के बाद सीताकुंड पड़ता है। यह कुंड अष्टभुजा मंदिर की पश्चिम दिशा की ओर माता सीता ने निर्मित करवाया था। उस समय से इस जगह को सीताकुंड के नाम से जाना जाता है। कुंड के समीप ही सीताजी ने भगवान शिव की स्थापना की थी। इस कारण यह स्थान सीतेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। वहीं, सीताकुंड की पश्चिम दिशा की तरफ भगवान श्रीरामचंद्र ने एक कुंड खोदा था, जिसे रामकुंड के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त शिवपुर में लक्ष्मणजी ने रामेश्वंर शिवलिंग के समीप ही एक अन्य शिवलिंग की स्थापना की थी, जो लक्ष्मणेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर बंदरों की बहुतायत संख्या श्रद्धालुओं को काफी लुभाती है। हरियाली के बीच गंगा तट के किनारे बने इन कुंडों पर आने के बाद मन को बड़ी शांति मिलती है।

अष्टभुजा पर्वत पर ज्वाला माता की ज्योति निरंतर जलती रहती है।

अष्टभुजा माता के प्रांगण में स्थापित हनुमानजी की मूर्ति पर चढ़ाई गई वजनी तलवार।

माता अष्टभुजा का भव्य श्रृंगार रूप देख श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

अष्टभुजा देवी

देवी अष्टभुजा यानी भगवान श्रीकृष्ण को पालने वाली माता यशोदा की पुत्री का मंदिर विंध्य पर्वत पर ही स्थित है। यहां के पुजारियों ने बताया कि श्रीकृष्ण को जन्म के समय ही मारने को तैयार कंस ने जब कन्हैयाजी को जन्म देने वाली माता देवकीजी की सातवीं संतान को छीना तब वह उसके हाथ से ओझल हो गई थीं। दरअसल, यशोदाजी की सातवीं संतान एक कन्या थीं। देवी अष्टभुजा माता का वही स्वरूप हैं। यहां हर रोज बड़ी संख्या में भक्तों का आना होता है। पेड़ों से घिरे और ऊंचाई पर बने इस मंदिर में आने के बाद पर्यटकों को काफी सुकून मिलता है। यह विंध्यवासिनी धाम से कमोबेश तीन किमी की दूरी पर स्थित है। यहां भी देवी–देवताओं के विभिन्न स्वरूपों की स्थापना की गई है। साल में दो बार नवरात्रि के अवसर पर यहां आने वालों की भीड़ देखते ही बनती है। यह स्थान तंत्रसाधकों के लिये भी काफी महत्वपूर्ण है। वे समय–समय पर यहां अपनी साधना को पूरा करने के लिये आते रहते हैं।

देवी अष्टभुजा के मंदिर प्रांगण में सदियों से जलती आ रही ज्वाला मां की ज्योति।

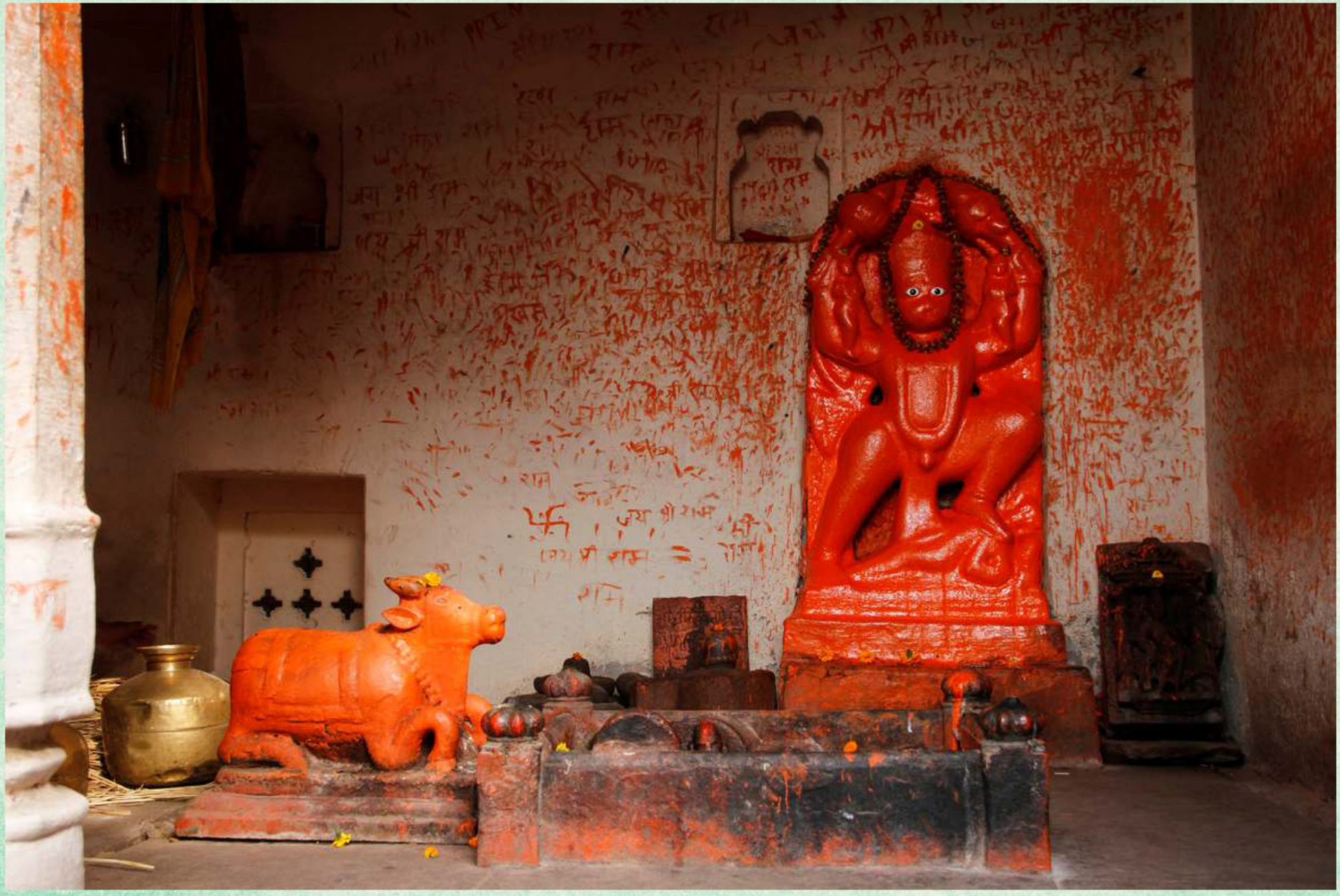

मां अष्टभुजा देवी के मंदिर परिसर में स्थापित महाबली हनुमान का भव्य रूप।

मोतिया तालाब की अपार है महिमा

गेरूआ तालाब को पार करने के बाद करीब एक किलोमीटर की चढ़ाई और पूरी करने के बाद मोतिया तालाब नजर आता है। मान्यता है कि इस तालाब में स्नान करने से कुत्ते के काटे मरीजों को लाभ होता है। यहां के पुजारी इसकी विशेष पूजा भी करवाते हैं। घाट को संवारने की कोशिश भी की गई है। तालाब में कमल के फूलों की बहुतायत मात्रा पर्यटकों के मन में सुख का संचार कर देती है। यहां स्थित शिवलिंग की पूजा-अर्चना करना तीर्थ के समान फलकारी बताया गया है।

मोतिया तालाब का जल आज भी स्वच्छ है।
श्रद्धालुओं में इस तालाब के प्रति विशेष श्रद्धा है।

मछेंद्रनाथ कुंड का मीठा पानी आत्मा को भी संतृप्त कर देता है।

मछेंद्रनाथ कुंड

भैरवकुंड से चंद कदम की दूरी तय करने के बाद करीब 15 सीढ़ी उतरने पर मछेंद्रनाथ कुंड नजर आता है। इसका सम्बंध बाबा गोरखनाथ के गुरू मछेंद्रनाथ से बताया जाता है। यहां पर साल के बारहों महीने एक कुंड में मीठे पानी का श्रोत बना रहता है। श्रद्धालु इस कुंड का पानी पीकर अष्टभुजा ग्राम की ओर कूच कर जाते हैं।

अष्टभुजा ग्राम में भी पर्यटकों की सुविधा का पूरा ख्याल रखा गया है। वहां दूर से आए पर्यटकों के लिए भोजन एवं ठहरने की उचित व्यवस्था की गई है। यहां पर सैलानी स्वयं भोजन पकाने के साथ ही ग्रामीणों से खाना बनवाकर खाते हैं। हर बरस दोनों नवरात्रि में यहां भक्तों का हुजूम उमड़ता है। साथ ही, होली के बाद करीब 15 दिनों तक यहां मेला लगता है, जिसके गवाह अन्य प्रदेशों के लोग भी बनते हैं।

भैरव कुंड का मनोहारी दृश्य।

भैरव जी का पूजन करने को उमड़े रहते हैं श्रद्धालु।

विशाल श्रीयंत्र का दर्शन करने के लिए दूर–दूर से आते हैं भक्त।

श्रीयंत्र

भैरवी मंदिर के समीप ही दूसरी ओर एक पत्थर के श्रीयंत्र की स्थापना की गई है। श्रद्धालुओं में इस श्रीयंत्र के प्रति बहुत ही गहरी आस्था है। इसकी लंबाई और चौड़ाई दोनों ही समान हैं। यह देखने में काफी सुंदर है। भैरव मंदिर से पूजन करने के बाद भैरव कुंड का जल पीकर श्रद्धालु देवी भैरवी के दर्शन करते हैं। अंत में श्रीयंत्र की पूजा कर वे अपने पूजन को सफल करते हैं।

भैरव–भैरवी देवी

अष्टभुजा मंदिर से पूजन करने के बाद भक्तों में भैरव और भैरवी की पूजा करने की मान्यता है। तंत्र सिद्धी के लिए भी इस मंदिर को काफी अहम माना जाता है। इस मंदिर में भैरवजी को मदिरा चढ़ाकर श्रद्धालु अपने लिए सुख की कामना करते हैं। यहां का वातावरण काफी शीतल और रमणीय नजर आता है।

रामेश्वर महादेव

रामेश्वर महादेव मंदिर विंध्याचल धाम से करीब एक किलोमीटर पर रामगया घाट के समीप स्थित है। मान्यता है कि गुरू वशिष्ठ के कहने पर भगवान श्रीराम ने अपने पूर्वजों की शांति के लिए यहां शिवलिंग की स्थापना की थी। विंध्यवासिनी मंदिर, अष्टभुजा देवी और रामेश्वर मंदिर ही मिलकर त्रिकोण बनाते हैं। त्रिकोण यात्रा में इन मंदिरों का इसीलिए विशेष महत्व है। इसी के नजदीक लक्ष्मणजी के हाथों स्थापित शिव मंदिर भी स्थित है, जिसे लक्ष्मणेश्वर के नाम से जाना जाता है।

रामगया घाट के समीप ही भगवान श्रीराम के करकमलों से स्थापित रामेश्वर महादेव की शिवलिंग

आस्था का संचार

पौ फटते ही मंदिरों से सुनाई देती है घंटे की गूंज। शाम ढलते ही गंगा आरती से रोशन हो जाता है यह पावन धाम। गंगा नदी के घाटों पर मन को मिलता है एकांत। आस्था का रग-रग में संचार कर देता है विंध्याचल माता की आंचल में बसा यह खूबसूरत शहर।

विंध्याचल धाम के घाटों का सवेरा
मन में श्रद्धा का भाव जगा देता है।

तारकासुर का वध कर धर्म की रक्षा करने वाले तारकेश्वर महादेव की शिवलिंग का श्रृंगार रूप।

तारकेश्वर मंदिर

मां गंगा के दक्षिणी तट पर नगर के पूर्वी भाग में विंध्याचल धाम से करीब आठ किलोमीटर की दूरी पर भगवान शिव के तारकेश्वर नाथ की स्थापना की गई है। कहा जाता है कि असुर तारकासुर ने यहीं पर तपस्या करके भगवान शिव की स्थापना की थी। यहां निरंतर भगवान शिव के तारकेश्वर स्वरूप की साधना होती रहती है। यह भी मान्यता है कि भगवान राम ने भी यहां पर अपने चरण रखे थे। शिवजी का दर्शन करने के बाद भगवान राम ने यहां बाग लगाया था जिसे रामबाग कहा जाता है। यही नहीं, इस मंदिर के बारे में यह भी वर्णन है कि भगवान विष्णु ने तारकेश्वर महादेव की आराधना करके उनसे सुदर्शन चक्र प्राप्त किया था। इसका वर्णन औशनस पुराण में भी किया गया है। इस मंदिर की पूरब दिशा में एक तालाब है। मान्यता है कि उक्त तालाब में स्नान करने से विकट से विकट कुष्ठ रोग भी समाप्त हो जाता है।

बूढ़ेनाथ मंदिर की शोभा यहां का मनोहारी निर्माण भी है।

पंचकोशी यात्रा में इस मंदिर का पूजन अनिवार्य माना जाता है। पंचकोशी यात्रा के तहत आने वाले मंदिरों में तारकेश्वर महादेव, संकट मोचन महाबीर मंदिर, बूढ़ेनाथ महादेव मंदिर, नारघाट काली मंदिर, लोहंदी महाबीर, लाल भैरव, विंध्येश्वर महादेव, भगवान वामन मंदिर, काल भैरव, दुग्धेश्वर महादेव मंदिर, नागकुंड, सप्त सरोवर और कंकाल काली मंदिर में विराजमान देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना की जाती है।

बूढ़ेनाथ मंदिर

विंध्याचल धाम से करीब आठ किलोमीटर की दूरी पर अति प्राचीन बूढ़ेनाथ मंदिर स्थापित है। दावा है कि उक्त मंदिर सैकड़ों बरस पुराना है। यहां की दीवारों पर पक्का और बरिया घाट सहित विंध्याचल धाम की दीवारों पर बनीं मूर्तियों के समान ही शिल्पकारी की गई है। इस जगह पर मंदिर के भीतर एक कुंआ भी है जो आज भी मीठे जल के स्रोत के रूप में मौजूद है। उक्त कुंए के पानी का जलस्तर कभी भी कम नहीं होता। वहीं, उसका स्वाद सदैव मीठा ही रहा है। इस मंदिर में सावन के महीने में विशेष पूजन का आयोजन किया जाता है। साल में कई अवसरों पर यहां से झांकी भी निकाली जाती है। शहर के मध्य में बने इस मंदिर के प्रति स्थानीय लोगों में गहरी आस्था है। इस मंदिर की पवित्रता ही कुछ ऐसी है कि इसके प्रांगण में प्रवेश करते ही मन को शांति मिलती है। यहां देवी–देवताओं के अन्य स्वरूपों की भी स्थापना की गई है। भगवान शिव के बूढ़ेनाथबाबा के स्वरूप से भक्त मनचाही मुरादें मांगते हैं।

बाबा बूढ़ेनाथ शिवलिंग का विशाल स्वरूप।

बाबा बूढ़ेनाथ के प्रति श्रद्धालुओं में है विशेष आस्था।

विंध्य धाम कोतवाली स्थित भैरव–भैरवी की भव्य मूर्ति।

कोतवाली भैरव–भैरवी मंदिर

विंध्याचल माता के मंदिर से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर ही भैरवजी और भैरवी देवी की संयुक्त मूर्तियों की स्थापना की गई है। इस मंदिर के दर्शन के बिना विंध्यवासिनी माता की पूजा को अपूर्ण ही माना जाता है। यह अनूठा ऐसा मंदिर है जहां भैरव और भैरवी दोनों की एक साथ पूजा होती है। विंध्याचल कोतवाली के ठीक सामने स्थित इस मंदिर में भी सिद्धी प्राप्ती के लिये पूजा की जाती है। साथ ही, तंत्र साधना करने वाले यहां पूजन–अर्चन किया करते हैं। इस मंदिर के प्रवेश द्वार के पास ही छोटी–छोटी दुकानों बनी हुई हैं। जहां पूजन सामग्री से लेकर हाथ के कड़े व महिलाओं के श्रृंगार के सामान आदि बिकते हैं।

मां तारादेवी को नींबुओं की माला पिरोकर पहनाई जाती है। माता के इस रूप की पूजा तंत्र साधकों के लिए काफी महत्वपूर्ण माना गया है।

तारादेवी मंदिर

रामगया घाट के समीप स्थित रामेश्वर मंदिर से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर विंध्य धाम लौटते समय नजर आने वाले श्मसान घाट पर ही तारादेवी मंदिर की स्थापना की गई है। यहां के पुजारी ने बताया कि ऐसी मान्यता है माता का यह स्वरूप तंत्रसिद्धी के लिए काफी महत्वपूर्ण है। देवी मां के इस स्वरूप को पूजने के लिए भक्तों की बड़ी संख्या में भीड़ यहां उमड़ा करती है। वहीं, गंगा नदी के तट पर स्थित इस बैकुंठ धाम पर वाराणसी के दशाश्वमेध एवं मणिकर्णिका घाट के समान ही चौबीसों घंटे पार्थिव शरीर का विसर्जन किया जाता है। इस मंदिर के प्रांगण में भक्त अपने पूरे परिवार के साथ शीष नवाने आते हैं। वर्ष में जब भी तंत्र जगाने का समय आता है तब यहां संन्यासी आदियों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

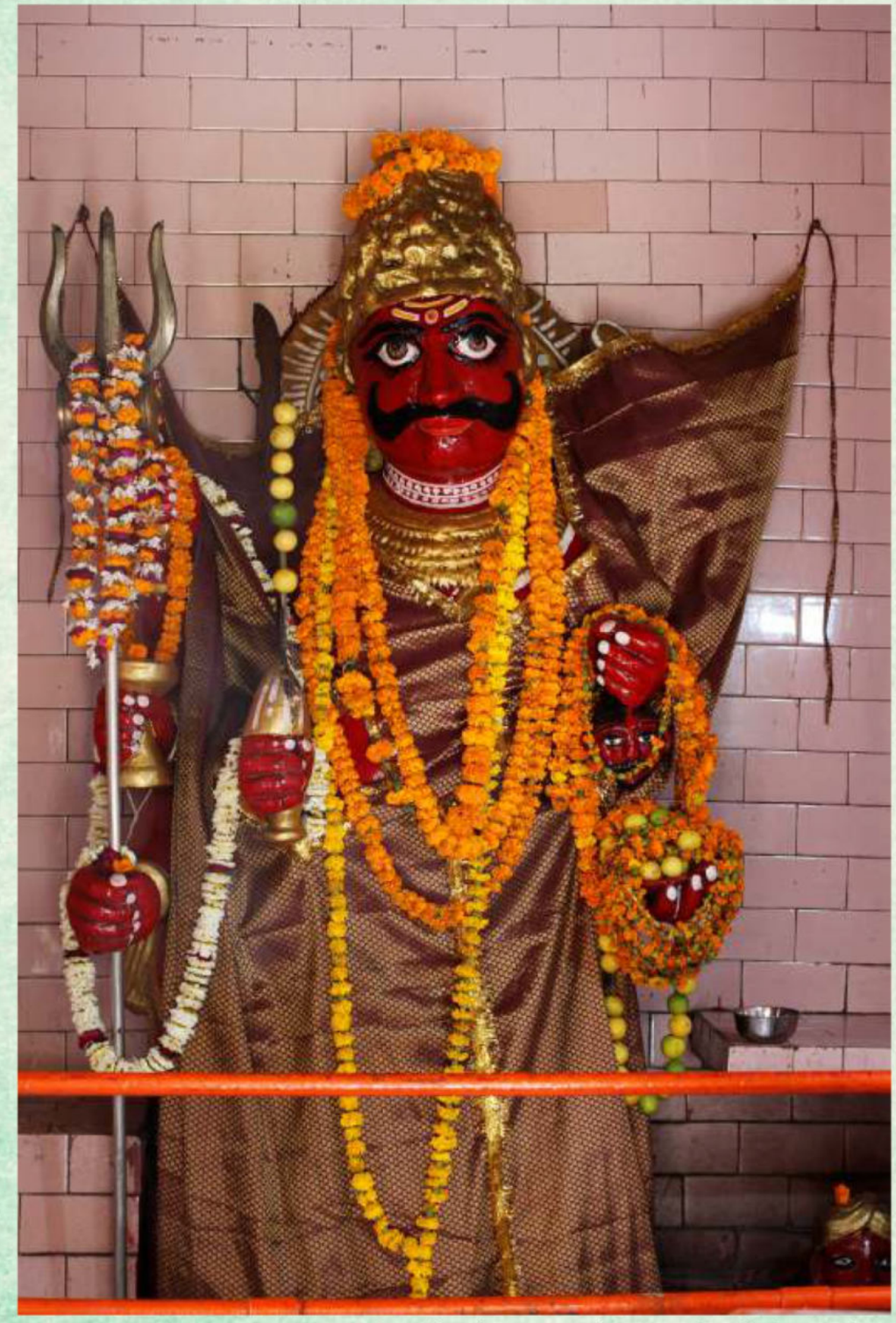

विंध्य क्षेत्र के पूरब द्वार के रक्षक माने जाते हैं लाल भैरव।

वामन अवतार मंदिर में भगवान विष्णु के अन्य अवतारों की भी पूजा–अर्चना की जाती है।

लाल भैरव

विंध्याचल धाम से करीब चार किलोमीटर पहले पूरब दिशा में द्वारपालक के रूप में भगवान लाल भैरव का मंदिर नजर आता है। इस मंदिर की खूबी यहां के भैरव देव की मूर्ति है। यहां के पुजारी एवं जूना अखाड़ा पंचदसनाम से सम्बद्ध महंत बालक गिरी बताते हैं कि ऐसी मान्यता है कि विंध्याचल धाम की पूरब दिशा के यह द्वारपालक हैं। यह भी कहा जाता है कि इनकी मूर्ति एक समय में अपना आकार बढ़ाती जा रही थी। मगर भक्तों की आराधना सुनकर मूर्ति ने अपना आकार बढ़ाना बंद कर दिया। इसके बाद मूर्ति तिरछी हो गई। वह बताते हैं, यहां पर विंध्याचल धाम से दर्शन करके लौटने वाले भक्तों का तांता लगा रहता है। लाल रंग की करीब सात फीट ऊंची यह मूरत बड़ी ही आकर्षक लगती है। इसके ठीक सामने से ही नागकुंड के लिए रास्ता जाता है।

विंध्येश्वर महादेव पर भक्तों की है अपार आस्था।

वामन अवतार मंदिर में भगवान विष्णु के अन्य अवतारों की भी पूजा–अर्चना की जाती है।

लोहंदी महाबीर

विंध्याचल धाम से करीब दस किलोमीटर दूर लोहंदी महाबीर मंदिर का निर्माण किया गया है। यहां एक समय में महर्षि लोमस रहा करते थे। यहां सावन के महीने में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। साथ ही, हर शनिवार को यहां मेले का आयोजन भी किया जाता है। इसमें दूर–दूर से भक्तजन आकर लोहंदी महाबीर की पूजा करने के बाद मेले का आनंद लेते हैं। महा त्रिकोण और पंचकोशी यात्रा में इस मंदिर में महाबीर के इस स्वरूप की पूजा अनिवार्य कही गई है। वहीं, मंदिर का रखरखाव भी काफी अच्छा है। यहां की हवाओं में भी पवित्रता की महक मिलती है। भक्त देव के इस स्वरूप के दर्शन–पूजन करने के साथ ही यहां के प्रांगण में कुछ समय बिताकर मन को सुकून भी देते हैं।

वामन अवतार मंदिर

उज्ज्वला और गंगा नदी के संगम पर तट पर विष्णु भगवान के वामन अवतार का पूजन किया जाता है। यहां हर गुरुवार को वामन देव की भव्य पूजा करने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लग जाता है। विंध्य धाम से करीब पांच किलोमीटर दूर स्थित इस मंदिर के प्रांगण में हनुमानजी के साथ ही विष्णुजी के कई रूपों की पूजा की जाती है। साथ ही, संगम के अनूठे वातावरण के बीच भक्तों का आनंद दूना हो जाता है। मान्यता है कि एक समय पर देवलोक को असुर राजा बली ने हड़प लिया था। तब इंद्रलोक को असुर बली से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था। धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है कि उक्त समव भगवन एक बौने ब्राह्मण के वेष में असुर राजा बली के पास गये और उनसे अपने रहने के लिए तीन कदम के बराबर भूमि देने का आग्रह किया। उनके हाथ में एक लकड़ी का छाता था। गुरु शुक्राचार्य के चेताने के बावजूद राजा बली ने वामन को वचन दे डाला। इसके बाद वामन अवतार ने अपना रूप दिखाया और दो ही पग में पूरी पृथ्वी और इंद्रलोक नाप लिया। इसके बाद उन्होंने बली से कहा कि वह तीसरा पांव कहां रखें। इसके जवाब में असुर ने कहा कि वह तीसरा कदम उसके सिर पर रखें। विष्णुजी अति प्रसन्न हो गए और उन्होंने अपने पांव उसके सिर से लगाकर उसे पाताल में भेज दिया एवं देवों को उनका देवलोक लौटा दिया था। यहां उनके उन्हीं वामन अवतार की पूजा की जाती है। यह भी मान्यता है कि उक्त स्थान पर ही राजा बलि के सिर पर पांव रखकर वामन अवतार ने उसे पाताल भेज दिया था।

कंकाली देवी मंदिर

मीरजापुर जनपद में मां काली के कंकाल स्वरूप के दर्शन करने के लिए देशभर से श्रद्धालुओं का आना होता है। यह जनपद के अकोढ़ी ग्राम के मध्य में इस मूर्ति को स्थापित किया गया है। बताया जाता है कि यह मूर्ति गढ़पालक नामक एक बाबा के पास खोदाई के समय में प्राप्त हुई थी। उसके बाद ग्रामीणों ने उसे यहां स्थापित कर दिया था। कंकाल के रूप में दिखने वाले देवी के इस स्वरूप की चर्चा दुर्गा सप्तशती में भी की गई है। तंत्र साधना करने वालों के लिये इस मंदिर में माता के दर्शन

सप्तसरोवर

देवराहा बाबा आश्रम से चंद मिनट की दूरी तय करने पर पहाड़ पर सात सरोवर नजर आते हैं। विंध्य क्षेत्र में माता के दर्शन करने के लिए आने वाले भक्तों में इन सातों सरोवरों में स्नान करने की मान्यता सदियों से चली आ रही है। नवरात्रि के समय यहां जब पर्यटकों की भीड़ उमड़ती है तो उनमें आस्था का सैलाब नजर आता है। वे इन सरोवरों में स्नान कर अपने मन की शुद्धि करते हैं। प्रकृति के इस मनोरम नजारे के बीच सरोवरों का दर्शन करना सभी के मन को मोह लेता है। इनमें स्नान करने को तीर्थ के समान बताया जाता है।

सप्त सरोवर को तीर्थों में स्नान करने की महत्ता बताई गई है।

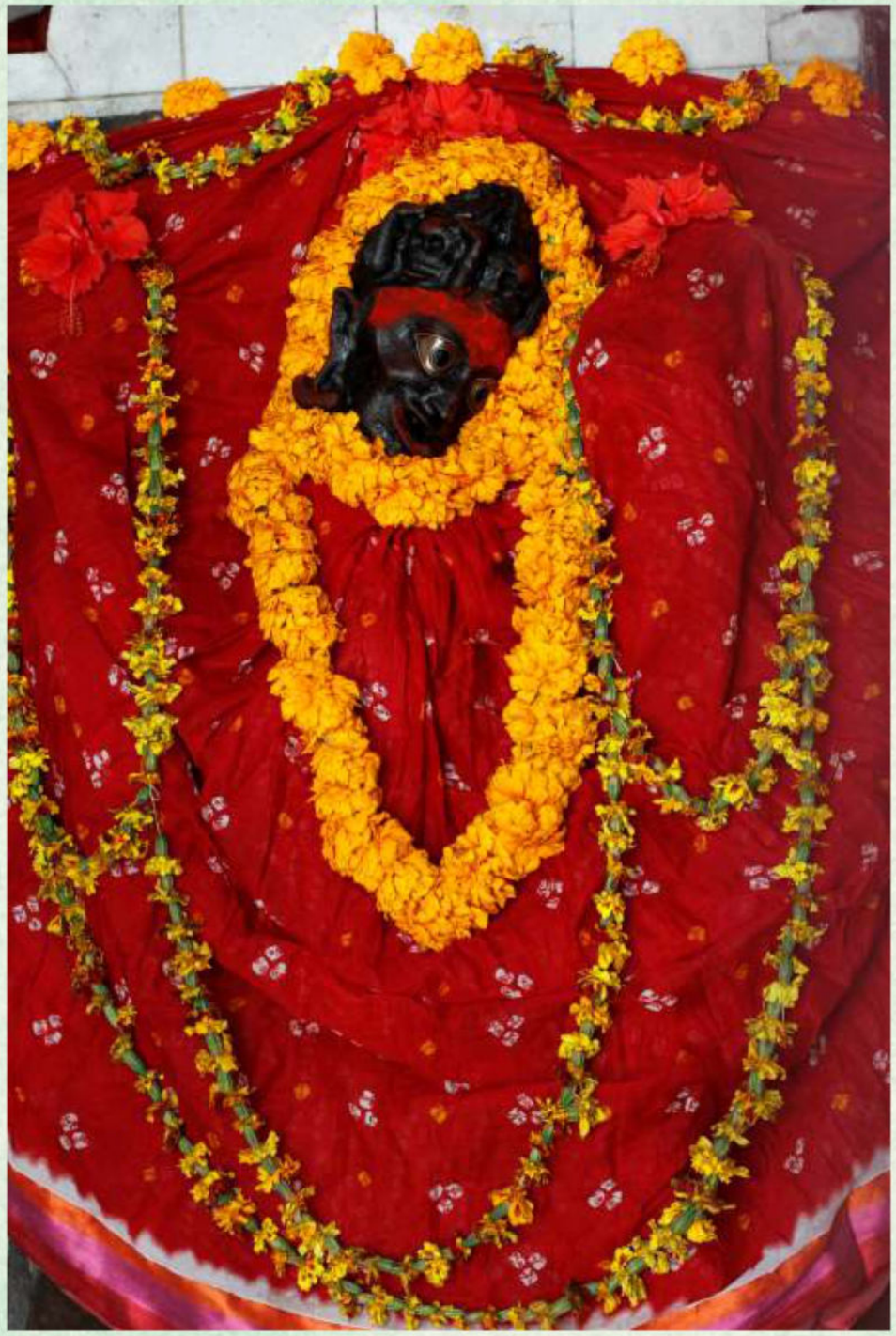

कंकाल काली माता की दिव्य मूर्ति।

दुर्गा खोह माता का मनोहारी मूर्तरूप।

दुर्गा खोह मंदिर

मीरजापुर क्षेत्र में विंध्य–वासिनी धाम से करीब दस किलोमीटर दूर दुर्गा खोह मंदिर स्थित है। गंगा नदी के तट पर बने इस मंदिर में दुर्गा मां के साथ ही भव्य शिवलिंग की भी स्थापना की गई है। अड़गड़ानंद आश्रम जाने के मार्ग में पड़ने वाले इस मंदिर में काली माता व अन्य देवी–देवताओं की भी मूर्ति स्थापित की गई है। साथ ही, तंत्र साधक यहां माता के इस स्वरूप के दर्शन करने के लिये सदैव लालायित रहते हैं।

शक्तेशगढ़ दुर्ग स्थित अड़गड़ानंद आश्रम का प्रवेश मार्ग ही चित्त में शांति का संचार कर देता है।

अड़गड़ानंद आश्रम में बाबा की पुण्य धुनि।

शक्तेशगढ़ आश्रम का मनोहारी दृश्य।

अड़गड़ानंद आश्रम का प्रवेश द्वार यहां की भव्यता को परिभाषित करता है।

शक्तेशगढ़ किला स्थित स्वामी अड़गड़ानंद आश्रम

चुनार दुर्ग से करीब 15 किलोमीटर दूर स्थित इस ऐतिहासिक किले में अब स्वामी अड़गड़ानंदजी का आश्रम है। यह दुर्ग उन्हें इस महल की रानी ने जगत की भलाई के लिए दान कर दिया था। मीरजापुर–चुनार मुख्य मार्ग पर बने इस दुर्ग की खूबसूरती पर्यटकों के मन में शांति देती है। पर्यटन व पूजन–वंदन के लिए यह स्थान काफी उपयुक्त है। यथार्थ गीता के रचयिता स्वामी अड़गड़ानंद के इस आश्रम में हर दिन श्रद्धालुओं की ओर से भंडारे का आयोजन किया जाता है। इसके तहत बड़ी संख्या में लोगों को यहां प्रतिदिन भोजन मुहैया कराया जाता है। वहीं, रमणीय वातावरण में लोगों को धर्म के साथ ही ज्ञान अर्जन की राह भी दिखाई जाती है। मान्यता है कि शक्तेशगढ़ दुर्ग बहुप्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप के अनुज राजा शक्तेश सिंह ने बनवाया था। इस बाबत जानकारी देते हुए आश्रम के संन्यासी तानसेन महाराज कहते हैं कि गंगा नदी के तट पर बने इस दुर्ग का हमेशा ही हरियाली ने साथ दिया है। आज भी हरियाली के बीच इस किले को देखना काफी मनोरम लगता है। वहीं, बाबा अड़गड़ानंदजी के रहने पर यहां हजारों की संख्या में भक्तों का आना होता है जो उनके मुख से ज्ञानवाणी सुनने के लिए दूर–दूर से यहां आते हैं।

देवराहा बाबा आश्रम में स्थापित राधा–कृष्ण का लोकलुभावन स्वरूप।

देवराहा बाबा आश्रम में हजारों की संख्या में गौवंशों को पाला जाता है।

देवराहा बाबा की मूर्ति सजीव सी जान पड़ती है।

देवराहा बाबा के आश्रम में बने राधा और कन्हैयाजी के भव्य मंदिर में दर्शन करने के लिए उमड़े भक्तजन।

देवराहा बाबा आश्रम

विंध्याचल धाम से दक्षिण दिशा की ओर करीब नौ किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद पहाड़ी नजारों के बीच से होते हुए ऊंचाई पर देवराहा बाबा आश्रम नजर आता है। देवरिया के सिद्ध संन्यासी रहे देवराहा बाबा के शिष्य देवराहा हंस बाबा की देखरेख में इस विशाल आश्रम का संचालन किया जाता है। इस आश्रम में गौवंशों की देखरेख के लिए गोरक्षा अभियान भी चलाया जाता है। यहां गाय और बैलों को रखने के लिए उचित प्रबंध किए गए हैं। आस–पास के ग्रामीण अपनी गाय को यहां छोड़ जाते हैं। जिनका, इस आश्रम में उचित तरह से पालन किया जाता है। यहां दूध देने वाली गाय और दूध न देने वाली दोनों गायों का पालन किया जाता है। यात्रियों के रहने के लिए भी यहां उचित प्रबंध किया गया है। वहीं, आश्रम के प्रांगण में राधाकृष्णेजी के भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया है।

बाबा सेमराद्यनाथ के दर्शन करने के लिये दूर-दूर से आते हैं भक्तजन।

सेमराद्यनाथ मंदिर

मीरजापुर मंडल में आने वाले भदोही जनपद में ही शिवजी का एक ऐसा मंदिर भी है जो बड़ा अनोखा है। दरअसल, इस मंदिर में शिवलिंग कुएं जैसी गहराई में स्थित है। यहां दावा किया जाता है कि पूरे भारत वर्ष में भगवान शिव का ऐसा कोई भी मंदिर नहीं है। भगवान शिव को यहां बाबा सेमराद्यनाथ के नाम से पूजा जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर के स्थान पर पहले सेमर का पेड़ लगा हुआ था। वहीं, बगल में ही गंगा नदी की धारा बहती थी। एक बार एक व्यापारी वहां से अपनी नांव से गुजरा तो उसकी नांव वहीं रुक गई। कोई कुछ समझ ही नहीं पाया। इसके बाद व्यापारी को शिवजी ने सपने में बताया कि उनकी शिवलिंग सेमर के पेड़ के नीचे दबी हुई है। वह उसे वहां से बाहर निकाले। व्यापारी ने शिवजी से अनुरोध किया कि वह व्यापार करने के बाद लौटते समय उनकी शिवलिंग को वहां से निकालेगा। इसके बाद वह अपनी राह चला गया। कुछ दिनों के बाद जब व्यापारी वापिस लौटा तो उसकी नांव फिर थम गई। इसके बाद उसने उक्त स्थान की खोदाई कराई। उसकी चाह थी कि वह शिवलिंग को लेकर अपने घर चला जाए मगर दिनभर की खोदाई के बाद भी वह शिवलिंग को निकाल नहीं पाया। इसके बाद शिवजी ने कहा कि वह उक्त स्थान को नहीं छोड़ना चाहते। उन्होंने वहीं स्थापित किये जाने की बात कही। इतना सुनने के बाद व्यापारी ने वहां मंदिर बनवाकर उसे गांव को सुपूर्द कर दिया था।

गंगा नदी के तट पर स्थापित लव–कुश मंदिर की महिमा अपार है।

लव–कुश मंदिर

सीतामढ़ी से चंद मिनट की दूरी पर ही महर्षि वाल्मीकि का आश्रम भी अति मनोहारी दर्शनीय स्थल है। यहां पर माता सीता के साथ लव और कुश की भी आराधना की जाती है। गंगा नदी के तट पर स्थित इस मंदिर को वाराणसी के एक ब्राह्मण परिवार ने बनवाया था। कहा जाता है कि जब भगवान श्रीराम ने माता सीता का परित्याग कर दिया था तब उन्हें महर्षि वाल्मीकि ने यहीं पर अपने यहां शरण दी थी। यहीं पर उन्हें लव और कुश नामक दो बालक हुए जिन्होंने श्रीरामजी के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को बांध लिया था। पर्यटकों और भक्तों का इस मंदिर में आने का सिलसिला लगा रहता है। गंगा नदी के किनारे बने इस मंदिर में आने के बाद यहां से जाने का मन नहीं करता है। यहां गंगा के तट पर विभिन्न धार्मिक आयोजन किये जाते हैं। वहीं, गंगा नदी की सैर कराने के लिए यहां नावों की बहुतायत संख्या भी मौजूद है जो सैलानियों को काफी पसंद आते हैं।

अवश्मेध यज्ञ के घोड़े को थामे लव और कुश की मूर्ति।

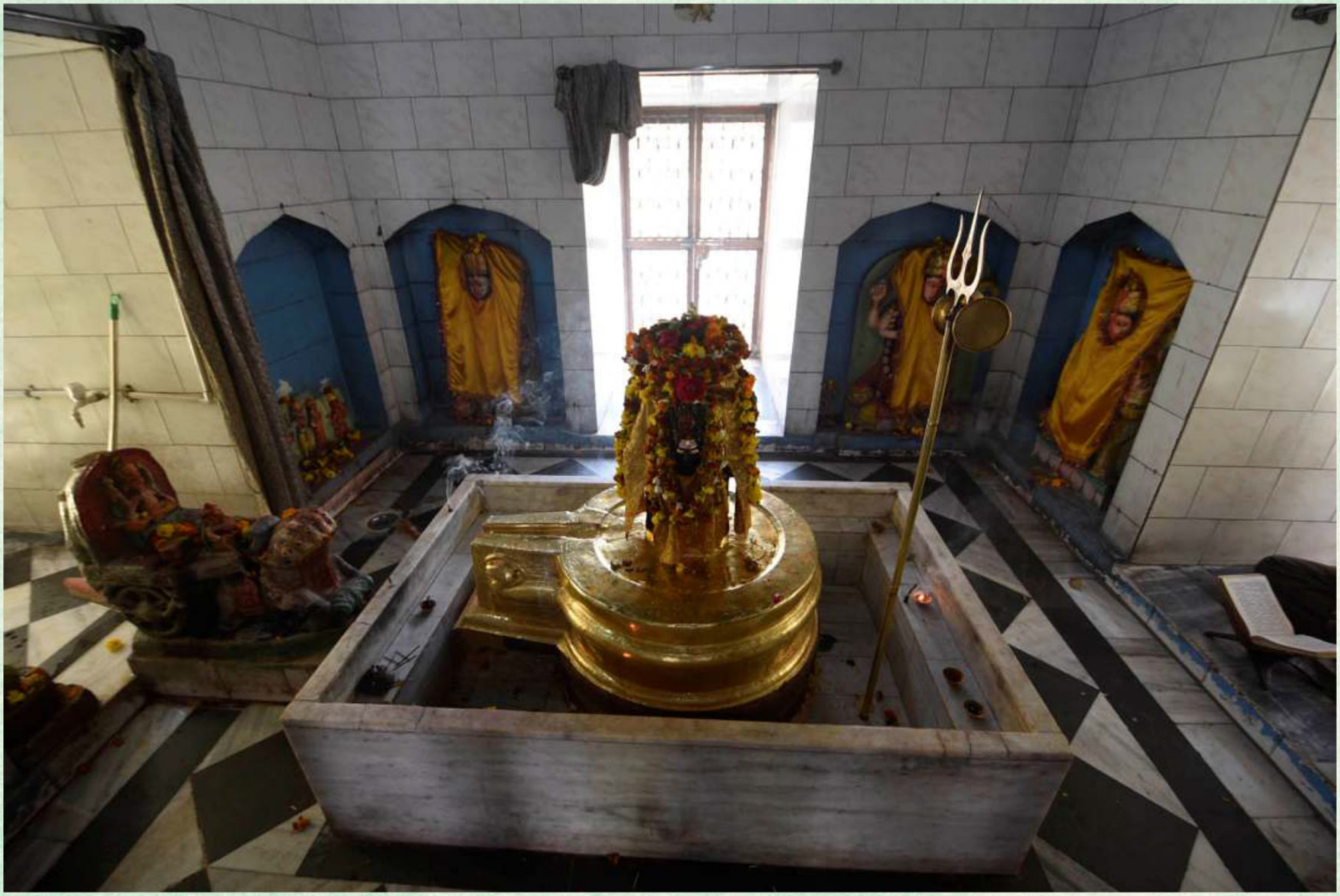

बरिया घाट स्थित पंचमुखी महादेव की भव्यता देख श्रद्धालु हो जाते हैं अभिभूत।

प्राचीन पंचमुखी महादेव मंदिर का सुंदर स्वरूप।

पंचमुखी महादेव के मंदिर परिसर में स्थापित प्रभु श्रीराम, सीता माता और लक्ष्मणजी की मूर्ति।

पंचमुखी महादेव (बरिया घाट)

मीरजापुर शहर में स्थित बरिया घाट पर ही पंचमुखी महादेव का मंदिर है। इस मंदिर को भी अति प्राचीन मंदिरों की सूची में स्थान दिया गया है। महादेव के इस भव्य स्वरूप की पूजा करने के लिए भक्तों का यहां निरंतर आना होता रहता है। दशहरा पर्व के समय इसी स्थान पर मेले का आयोजन किया जाता है। बरिया घाट पर श्रद्धालुओं का गंगा स्नान करने का विशेष महत्व माना गया है। इस मंदिर को बहुत ही सुंदर ढंग से निर्मित किया गया है। यहां की दीवारों पर उर्वशियों के हाथों में ढोल व मृदंग बनाए गए हैं जो सजीव से जान पड़ते हैं। मीरजापुर के विभिन्न घाटों के बीच बरिया घाट का स्थान अहम है। यहां की सीढ़ियों पर सैलानियों का जमावड़ा सा लगा रहता है। इस मंदिर के आस–पास विभिन्न देवी–देवताओं के स्वरूपों की पूजा की जाती है। वहीं, मंदिर में लगे घंटों के शोर से मन में श्रद्धा का संचार होने लगता है। यहां का वातावरण बड़ा ही मनोहारी है। इस मंदिर में भगवान राम, सीता और लक्ष्मणजी की भी मूर्ति स्थापित की गई है।

भदोही जिले के सीतामढ़ी क्षेत्र में ही मां सीता भूमि में समाहित हो गई थीं। देश–विदेश से श्रद्धालु इस स्थान के दर्शन करने के लिए आते हैं।

सीतामढ़ी स्थित सीता समाहित स्थल पर बनी शिवजी की भव्य मूर्ति।

सीता समाहित स्थल मंदिर का नजारा मन में आस्था का सैलाब जगा देता है।

सीतामढ़ी

मीरजापुर मंडल के तहत आने वाले भदोही जिले में इलाहाबाद और वाराणसी के मध्य स्थित जंगीगंज बाजार से करीब ग्यारह किलोमीटर दूर गंगा के किनारे पर सीतामढ़ी स्थित है। मान्यता है कि इस स्थान पर मां सीता ने अपने आपको धरती में समाहित कर लिया था। इसीलिए इस जगह को सीता समाहित स्थल भी कहा जाता है। इस जगह उद्योगपति प्रकाश नारायण पुंज की मदद से पर्यटन स्थल बना दिया गया है। यहां पर अतिथियों के ठहरने और उनके भोजन की उचित व्यवस्था के साथ ही मंदिर प्रांगण को स्वच्छ रखा जाता है। गंगा नदी के जल से घिरे इस स्थान पर मंदिर को दो मंजिल में बनाया गया है। इसमें पहले मंजिल पर माता के भूमि में समाहित होते स्वरूप को दर्शाया गया है। वहीं, दूसरी मंजिल पर माता के मनोरम रूप की आराधना के लिए दर्शन की व्यवस्था की गई है। सफेद रंग के पत्थर से कराए गए इस मंदिर के निर्माण के साथ ही यहां हरियाली का भी विशेष ध्यान रखा गया है। यहां पर हनुमानजी की 108 फीट ऊंची मूर्ति भी बनाई गई है, जिसे विश्व की सबसे बड़ी हनुमान मूर्ति होने का गौरव प्राप्त है। इस स्थान को सैलानी और श्रद्धालु दोनों ही अपनी यादों में बसा लेना पसंद करते हैं। वे यहां मनोरम वातावरण को कभी भुला नहीं पाते होंगे।

माता सीता की भव्य मूर्ति को देख श्रद्धा उमड़ पड़ती है।

108 फीट ऊंची महाबली हनुमान की विशाल मूर्ति।

घोरावल के शिवद्वार मंदिर में स्थापित शिव–पार्वती की कालजयी प्राचीन मूर्ति।

गंगातट पर बने तिरूपति बालाजी के मंदिर में प्रवेश करते ही मन को शांति मिलती है।

शांत एकांत

तीनों लोकों में पूज्यनीय विंध्याचल माता के चरणों में बसे शहर मीरजापुर की खूबी यहां के घाट हैं। यहां के घाटों की सुबह और शाम को कोई भुला नहीं सकता। यहां कुछ देर ठहरने के बाद ही मन में हो रहे सभी कोलाहल शांत हो जाते हैं। इस जनपद में यूं तो कई घाट हैं मगर उनमें से पक्का, बरिया और नार घाट की महत्ता अधिक मानी जाती है। भक्त और सैलानी गंगा तट के इस एकांत वातावरण में अपनी सभी चिंताओं को बिसरा देते हैं। वे नई स्फूर्ति पाकर अपनी जिंदगी को नई दिशा देते हैं।

मीरजापुर शहर का पक्का घाट और यहां की दीवारों पर बनाई गई उर्वशियों के मूर्तियां।

बरिया घाट की सुबह और शाम बड़ी मनोहारी होती है।

सैलानियों के लिए मीरजापुर के विभिन्न घाटों पर नौकाविहार की विशेष व्यवस्था की गई है जो उनकी यात्रा को अविस्मरणीय बना देती हैं।

मान्यता है कि प्रभु श्रीराम ने रामगया घाट पर ही अपने पिता दशरथ की आत्मा की शांति के लिए पिंडदान किया था। आज भी इस स्थान पर उनके चरण चिन्ह दिखते हैं।

अपने पितरों का अंतिम संस्कार करने के उपरांत गंगा नदी में स्नान करने की प्राचीन परंपरा रही है।

रामगया घाट पर प्राचीन भव्य इमारत अथवा मंदिर का अवशेष पहली ही झलक में आस्था को जगा देता है।

रामगया घाट

तारादेवी मंदिर के समीप ही गंगा नदी की ओर देखने पर केसरिया रंग का एक बड़ा सा पत्थर नजर आता है। मान्यता है कि प्रभू श्रीराम ने वहीं पर अपने पिता दशरथ की आत्मा की शांति के लिए पिंडदान किया था। यहां के पंडा समाज के मुताबिक, रावण का वध करके लौटते समय जब श्रीराम विंध्य क्षेत्र में पहुंचे तो उनका मन अधीर होने लगा था। अपने गुरू वशिष्ठ से इस बारे में पूछने पर उन्हें बताया गया कि पिता दशरथ की आत्मा की शांति के लिए उन्हें त्रिलोक पूज्य विंध्यवासिनी क्षेत्र में उनका पिंडदान करना होगा। उस समय उनके साथ माता सीता और लक्ष्मण सहित हनुमानजी भी मौजूद थे। इसके प्रमाण में यहां नजर आने वाले पैरों के निशान आज भी साफ देखे जा सकते हैं। स्थानीय लोग बताते हैं कि प्रभु श्रीरामजी के चरण चिन्ह पर बारहों मास पानी से सीलन बनी रहती है। इस घाट के नाम पर चर्चा करने पर स्थानीय लोग बताते हैं कि मान्यता है कि यहां पिंडदान करने के बाद प्रभु श्रीराम गया में पूजन करने के लिये रवाना हो गए थे इसीलिए इसे रामगया घाट कहते हैं।

वहीं, रामगया घाट की महत्ता वहां मौजूद कई टूटे पड़े शिवलिंग, पत्थर के बड़े शिलालेख, स्तंभ, उत्तम शिल्पकारी किए गए चबूतरे आदि भी हैं। पहली ही नजर में पर्यटकों को सोचने पर मजबूर कर देने वाले इन अवशेषों के बारे में स्थानीय ग्रामीण बताते हैं कि मान्यता है कि एक समय में यहां विंध्याचल माता के विवाह का आयोजन हो रहा था। उस समय उनकी बारात लेकर आए सभी सदस्य सिंदूर लाना भूल गए थे। इसी से नाराज होकर माता ने सभी बारातियों को पत्थर का हो जाने का श्राप दे दिया। कहते हैं कि उक्त भग्नावशेष उन्हीं बारातियों के हैं। हालांकि, तारादेवी मंदिर के पुजारी बताते हैं कि एक समय पर यह एक खूबसूरत सा मंदिर हुआ करता था। गंगा नदी की धारा भी दूर हुआ करती थी। लेकिन, समय बदला और गंगाजी ने अपनी दिशा बदल दी। उसी जलधारा में पड़कर मंदिर ढह गया होगा। खैर, इनमें से सच कुछ भी हो लेकिन पत्थर के टुकड़े देखकर कोई भी यह अंदाजा लगा सकता है एक समय में वहां की संरचना उच्च स्तर की रही होगी।

विंध्याचल घाट

d y d y d j r h
t y/kkjk

टांडा फॉल पर ब्रिटिश हुकूमत का बनवाया गया डैम आज भी अपनी सुंदरता और विशालता को सहेजे हुए है।

मीरजापुर जनपद का जितना धार्मिक महत्व है, उतना ही पर्यटन के लिहाज से भी विशेष स्थान है। दर्जनों विशालकाय झरनों को अपनी गोद में समेटे यह जनपद प्रति के अनोखे खजाने से भरा पड़ा है। यहां का हर जल प्रपात अपनी विशेष गुण के लिए जाना जाता है। प्रवासी पक्षियों को भी यहां की आब-ओ-हवा काफी पसंद है। यही कारण है कि यहां बारहों महीने अलग-अलग प्रजाति की ढेरों चिड़ियाओं का चहचहाना बना रहता है...

टांडा फॉल

मीरजापुर जिला मुख्यालय से करीब 20 किलोमीटर दूर रीवां मार्ग पर स्थित इस मनोरम फॉल को देखना किसी सुखद संयोग से कम नजर नहीं आता। हरियाली के बीच बने इस कुदरती वरदान की पहली झलक ही मन में पर्यटन का जोश दोगुना कर देती है। करीब 100 फीट की ऊंचाई से गिरने वाले इस झरने को देखने के लिए सैलानियों की भीड़ उमड़ी रहती है।

इसके ठीक पीछे वर्ष 1900 में अंग्रेजी हुकूमत की ओर से बनवाया गया एक डैम भी यहां स्थित है। इस डैम के बारे में बताया जाता है कि उक्त डैम के पानी से ही एक समय में मीरजापुर शहर में पेयजल मुहैया कराया जाता था। आस–पास के गांव भी पर्यटन का खूबसूरत हिस्सा हैं। यहां का वातावरण काफी मनोरम है। एक पहाड़ी की ऊंचाई पर चढ़कर तेज रफ्तार में जल की हाहाकार करती तेज धारा को देखना हर सैलानी की पहली पसंद है। झरनों के शौकीनों को विंध्याचल धाम की इस खूबी को जरूर जीना चाहिए।

खड़ंजा

मीरजापुर जनपद के साथ ही बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में सभी की प्यास बुझाने वाली खजुरी नदी के जल की भी बड़ी महत्ता है। इस नदी के पावन और शीतल जल की धारा से इस जिले के रहवासियों की प्यास ही नहीं बुझती है बल्कि इसकी जलधारा जिन लाल च ानों के बीच से होते हुए गुजरती है वह यहां आने वाले पर्यटकों को भी काफी पसंद है। यहां के वातावरण में काफी शांति है। मीरजापुर मुख्य मार्ग से सोनभद्र की ओर सर्पीली आकार में भागती सड़क के किनारे बने खड़ंजा की खूबसूरती से यहां से गुजरने वाले राहगीर भी नहीं बच पाते। वहीं, इस नदी के दोनों के छोरों पर उगे पेड़ों की अमराइयों में प्रवासी पक्षियों का सदैव बसेरा बना रहता है। हर मौसम में यहां प्रवासी पक्षियों का बसेरा सजा रहता है। लंबी यात्रा तय करके दूर-दूर से आने वाले इन प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए भी यहां पक्षी प्रेमियों का जमावड़ा लगा रहता है। इस बाबत पूछने पर यहां के स्थानीय लोगों ने बताया कि यहां प्रवासी पक्षियों का आना-जाना लगा रहता है। उन्होंने बताया कि जहां दूसरे जनपदों में गौरैया जैसी चिड़िया गुम होती जा रही है। वहीं, यहां के घाटें व छोटी नदियों के किनारे गौरैया सहित अन्य कई प्रकार के पक्षियों का मेला सा लगा रहता है। कई किलोमीटर तक फैली इस नदी का पानी काफी स्वच्छ और औषधीय गुणों से लबरेज है। इसकी पुष्टि भी समय-समय पर विभिन्न भूवैज्ञानिकों ने की है। युवाओं के लिए रोमांचकारी इस नदी के तटें की खूबसूरती यहां की हरियाली भी है। खासकर, मानसून आने के बाद यहां का नजारा और भी दिलकश हो जाता है।

yksvj [kMatk unh dk LoPN Lo:i cjcl eu ds,dkar esa?kj dj tkrk gA

कई एकड़ तक अपनी सुंदरता को सहेजे यह जल प्रपात सैलानियों की पहली पसंद है।

लखनिया घाट

विंध्याचल धाम से करीब 70 किलोमीटर दूर स्थित लखनिया घाट प्रकृति का इस जनपद को अनूठा वरदान है। कई एकड़ के क्षेत्रफल में फैले इस घाट में तेज पानी का धार पर्यटकों में रोमांच पैदा कर देता है। खासकर, सावन महीने के आस–पास इस जगह की हरियाली और बढ़ जाती है। वाराणसी मार्ग पर स्थित इस घाट पर सैलानी बड़ी दूर–दूर से आते हैं। यहां के शांत वातावरण के साथ ही पानी के कलकल करते स्वर से मन निर्मल हो जाता है। यहां के जंगलों में कई जगहों पर आदिवासियों के बनाए भित्ती चित्र भी हैं जो हमेशा ही शोधार्थियों के लिए रोचक विषय रहे हैं।

मुख्खा फॉल में सैकड़ों फीट की ऊंचाई से निरंतर गिरता झरना मन में रोमांच पैदा कर देता है।

मुख्खा फॉल

यह फॉल मीरजापुर शहर से तकरीबन 60 किलोमीटर दूर घोरावल के पास सोनभद्र जिले में स्थित है। यहां की पहाड़ियों के बीच झरने की धार को देखना मन में रोमांच का संचार कर जाता है। यही नहीं, यहां की पहाड़ियों पर आदिमानवों ने सुंदर चित्रकारी कर रखी है। जो शोध का विषय भी है। यहां के ग्रामीणों का मानना है कि वनदेवी का यहां की प्रकृति पर आशीष है। इस फॉल के रमणीय सौंदर्य का लुभावनापन पर्यटकों को बहुत भाता है। इसके अतिरिक्त यहां की जलधारा की स्वच्छता भी देखते ही बनती है। जनपद मुख्यालय से करीब दो घंटे की दूरी पर स्थित इस फॉल को देखने जाने वाले बरबस ही यहां अपना दिल दे बैठते हैं। स्थानीय लोग इस फॉल को पूज्यनीय भी मानते हैं।

सिद्धनाथ की दरी में झलकती है यहां की विशालता और धार्मिक आस्था।

सिद्धनाथ की दरी

विंध्याचल धाम से करीब 50 किलोमीटर दूर चुनार–राजगढ़ मार्ग पर स्थित है प्रसिद्ध सिद्धनाथ की दरी। यह जलप्रपात काफी रमणीय है। तेज जलधारा के साथ ही बाबा सिद्धनाथ का आसन भी पर्यटकों के लिए हमेशा से रोमांच पैदा करता रहा है। काफी बड़े क्षेत्र में फैले इस वाटर फॉल की खूबसूरती इसकी विशालता के साथ ही हरियाली भी है। रंग–बिरंगी पक्षियों का यहां हमेशा जमावड़ा सा लगा रहता है। इस जलप्रपात को देखने के लिए बरसात के दिनों में दूर–दूर से पर्यटकों का यहां आना होता है। वे यहां आकर जंगल के किनारे बाटी–चोखा आदि का स्वाद लेते हैं। इसकी गहराई को देखते हुए जिला प्रशासन ने यहां चौतरफा सुरक्षा के कड़े इंतजाम कर रखे हैं। प्रसिद्ध शक्तेशगढ़ दुर्ग से इसकी दूरी करीब पांच किलोमीटर है। वहीं, चुनार दुर्ग से इसकी दूरी करीब 14 किलोमीटर है। बरसात के मौसम में इस जलप्रपात में करीब 100 फीट की ऊंचाई से पानी की धारा को गिरते हुए देखना पर्यटकों में रोमांच पैदा कर देता है।

अलोपी दरी

मीरजापुर से करीब 35 किलोमीटर दूर चुनार मार्ग पर पड़री से दक्षिण दिशा में अलोपी दरी स्थित है। यह जंगलों के बीच बेहद सुंदर वातावरण के बीच बना हुआ है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य पहली नजर में ही मन को रोमांचित कर देता है। यह एक रमणीय स्थल है।

सिरसी डैम

मीरजापुर से लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर सिरसी डैम स्थित है। यह जलप्रपात सोनभद्र जाने वाले मार्ग पर है। यहां एक विशालकाय बांध भी बनाया गया है। यहां करीब 200 फीट की ऊंचाई से गिरती तेज जलधारा को देखने के सैलानी दूर–दूर से आते हैं।

जरगो बांध

चुनार से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर जरगो बांध का निर्माण किया गया है। चुनार से इमलिया बाजार होते हुए इस डैम पर पहुंचा जा सकता है। यह बांध जरगो नामक नदी पर बना हुआ है। इसके निर्माण का असली मकसद सिंचाई है। इसके अलावा इस स्थान की रमणीय सौंदर्यता को निहारने के लिए पर्यटकों का आना यहां लगा रहता है।

कुशियरा फॉल

कुशियरा फॉल मीरजापुर शहर से करीब 38 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इलाहाबाद मार्ग पर गैपुरा से दक्षिण दिशा की ओर जाने पर यह रमणीय फॉल नजर आता है। बरसात के मौसम के बाद इस झरने का कलकल करता शोर सैलानियों को मोहने लगता है। कुशियरा फॉल में भी कई भित्तीचित्रों होने का दावा किया जाता है। यहां का जंगल बड़ा ही मनोहारी है।

पेहती की दरी

यह झरना मीरजापुर जनपद से करीब 47 किलोमीटर की दूरी पर चुनार से लगभग सात किलोमीटर पहले दक्षिण दिशा की ओर है। इसे लहौरा गांव के नाम से भी जाना जाता है। दरअसल, उसी गांव से जंगल के रास्ते तकरीबन तीन किलोमीटर पैदल चलने के बाद इस रमणीय झरने का दर्शन हो पाता है।

चुनार दरी

यह झरना मीरजापुर शहर से लगभग 72 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह चुनार से अहरौरा जाने वाले मार्ग पर करीब 10 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद आने वाले लखनिया वाटर फॉल के पास पड़ता है। लखनिया से ही इस दरी की ओर जाने का रास्ता है। अत्यंत दुर्गम स्थान पर बने इस वॉटर फॉल तक पहुंचने के लिए करीब तीन किलोमीटर की दूरी को जंगल के बीच से तय करना पड़ता है। मगर अंततः इस विशालकाय जल प्रपात को देखने के बाद मन का रोमांच जहां कई गुना बढ़ जाता है वहीं थकान पलभर में ही काफूर हो जाती है।

बोकरिया दरी

बोकरिया दरी मीरजापुर मुख्यालय से करीब 18 किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है। यह लालगंज जाने वाले मार्ग पर पड़ता है। हालांकि, यहां के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। यहां का नजारा भी बड़ा मनमोहक है। सैलानियों को इस जल प्रपात पर आकर प्रकृति के अनोखे सौंदर्य का आनंद जरूर लेना चाहिए।

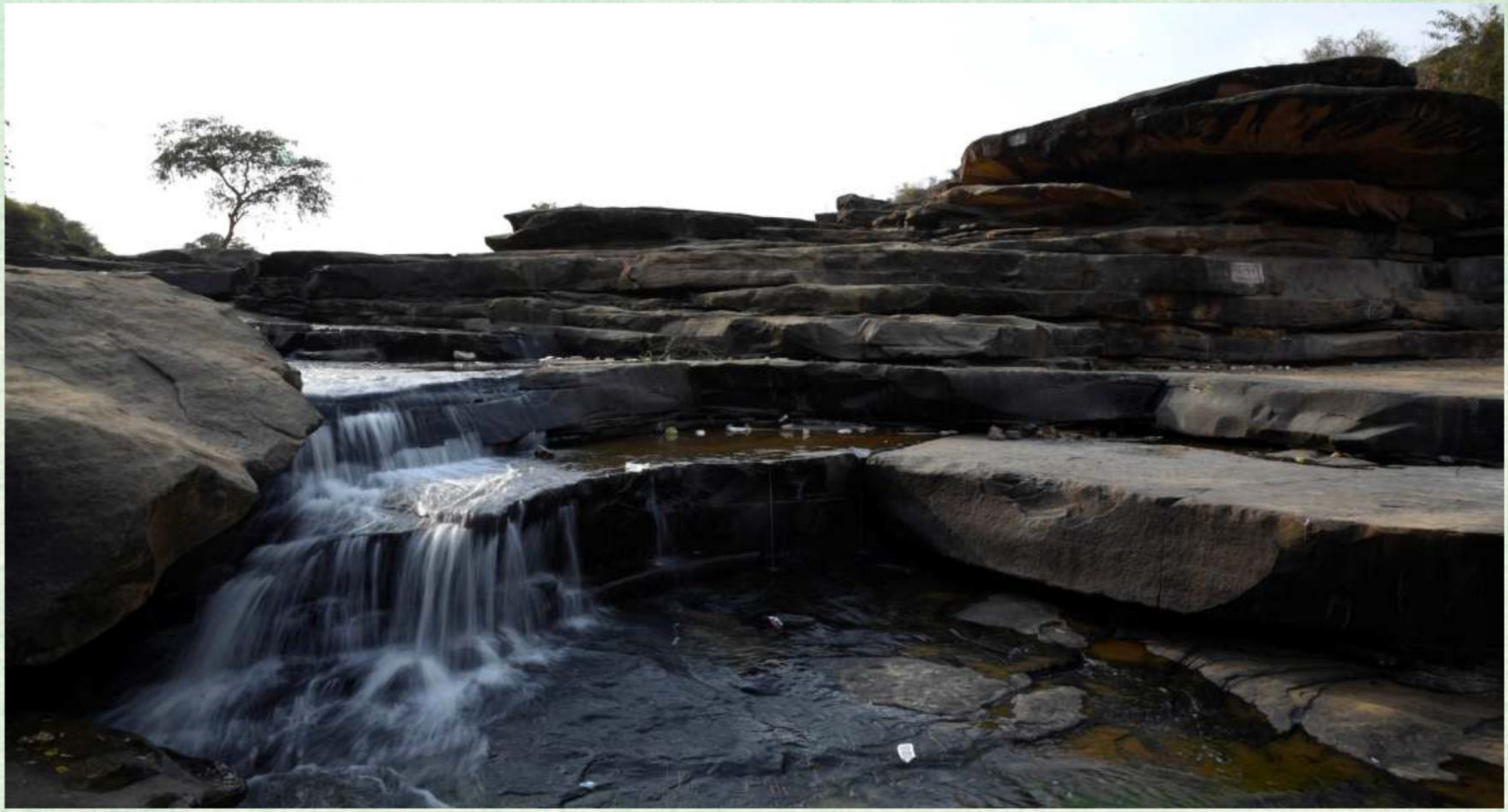

विंढम फॉल पर आने वाले पर्यटक यहां के मनोहारी दृश्य को कभी भुला ही नहीं सकते।

विंढम फॉल

मीरजापुर मुख्यालय से करीब 16 किलोमीटर दूर स्थित विंढम फॉल का दृश्य भी काफी मनोहारी लगता है। बरसात का मौसम आते ही यहां के पानी की धार बढ़ने के साथ ही पर्यटकों का आना भी शुरू हो जाता है। लाल चट्टानों के बीच से बहती हुई जलधारा लोगों के मन में शीतलता ला देती है। यहां हर पग पर रोमांच के साथ ही प्रकृति की मनोरम संरचना पर्यटकों के चेहरे पर खुशी ला देती है। पक्षीप्रेमियों के लिए भी यह जगह काफी मुफीद है। साथ ही, यहां के जलप्रपात के एक छोर पर बारहों महीने चट्टानों से रिसने वाला पानी औषधीय गुणों से भरा हुआ है। स्थानीय गाइड ने बताया कि कई बार यहां की इस जलधारा का बनारस हिंदू विश्व विद्यालय (बीएचयू) की ओर से निरीक्षण भी कराया गया है, जिसमें इसकी पुष्टि की गई है कि उक्त धारा में पेट से सम्बंधित रोगों से मुक्ति दिलाने वाले औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। पर्यटकों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हुए यहां जगह–जगह पर सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए गए हैं। ऊंची लाल चट्टानों के बीच शाम के समय यहां ली गई तस्वीरों में रोमांच कई गुना बढ़ जाता है। विंध्याचल धाम से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित रॉबर्ट्सगंज मार्ग पर बने इस विंढम फॉल का नजारा बरसात में इतना विहंगम हो जाता है कि पर्यटक यहां दूर–दूर से आकर बाटी–चोखा का स्वाद लेने को आतुर हो जाते हैं।

ाष ध्यान रखते हुए यहां जगह–जगह पर सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए गए हैं। ऊंची लाल चट्टानों के बीच शाम के समय यहां ली गई तस्वीरों में रोमांच कई गुना बढ़ जाता है। विंध्याचल धाम से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित रॉबर्ट्सगंज मार्ग पर बने इस विंढम फॉल का नजारा बरसात में इतना विहंगम हो जाता है कि पर्यटक यहां दूर–दूर से आकर बाटी–चोखा का स्वाद लेने को आतुर हो जाते हैं।

घुमक्कड़ी लोक

रोमांच और इतिहास का अजब मिलन होता है यहां। पग-पग पर तिलिस्मी गाथाओं का बखान मीरजापुर की खासियत को दूना कर जाता है। गंगा की धार किनारे बसे इस शहर में इतिहास अब भी रोचक तथ्यों को समेटे अपने सैलानियों का इंतजार कर रहा है। जनपद के इस घुमक्कड़ी लोक की सैर करना देश के सदियों पुराने इतिहास को जीने जैसा है...

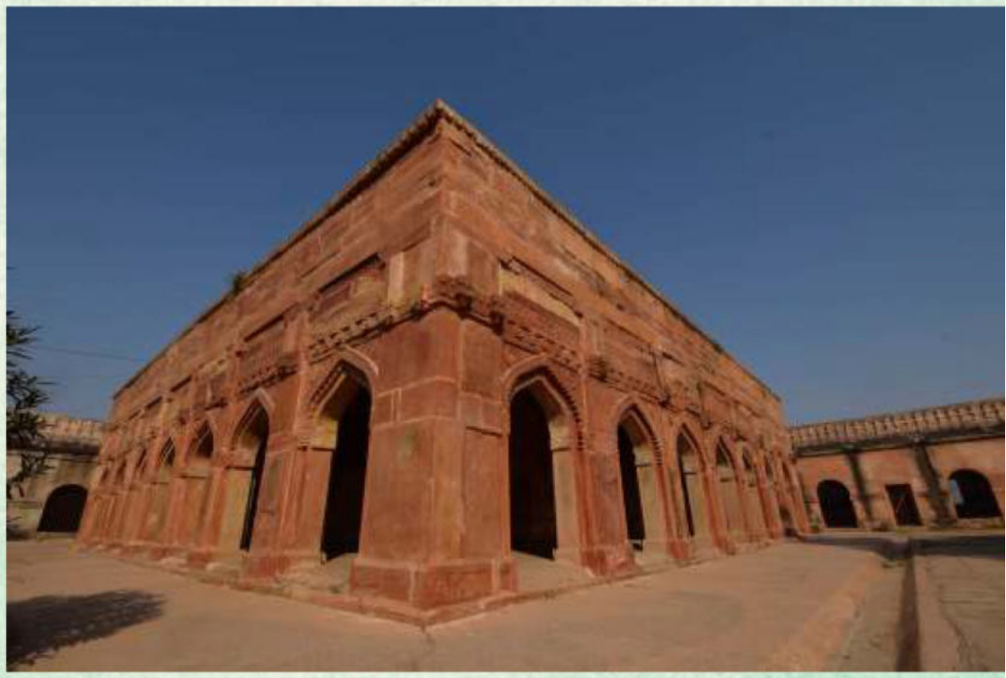

चुनार दुर्ग अपनी विशेष वास्तुकला के साथ ही रोचक इतिहास के लिए भी प्रसिद्ध है।

चुनार किले की विशालता की एक झलक।

चुनार दुर्ग का एक भव्य प्रवेश द्वार।

चुनार का किला

विंध्याचल में चुनार क्षेत्र का बड़ा महत्व है। यहां ऐतिहासिक चुनार किला होने के साथ ही गंगा नदी में कुलांचें मारतीं गेंजेटिक डॉल्फिलन पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती रहती हैं। वहीं, चुनार मुख्य मार्ग के दोनों ओर मिट्टी के मूर्तिकारों की शिल्पकला इस जगह की रोजी–रोटी के साथ ही यहां आने वाले घुमक्कड़ों को खासा पसंद आते हैं। इससे इतर ईस्ट इंडिया कंपनी के पहले गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंगस की कोठी व वहां निर्मित सूर्य घड़ी यहां की खूबियों में चार चांद लगा देती है।

मीरजापुर जनपद से करीब 35 किलोमीटर दूर बसे इस ऐतिहासिक शहर की महत्ता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि भारत में तिलिस्म जैसे विषय पर लिखने की शुरुआत करने वाले महान हिंदी लेखक देवकीनंद खत्री ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक चंद्रकांता में भी चुनार का जिक्र किया है। यहां का ऐतिहासिक किला आज भी रहस्यमयी नजर आता है। इसकी ऊंची–ऊंची दीवारें पर्यटकों को रोमांचित कर जाती हैं। गंगा नदी के तट पर बने इस किले की ऐतिहासिक उपलब्धि भी कम रुचिकर नहीं है। इस किले पर राज करने वालों की सूची में उज्जैन के राजा विक्रमादित्य, पिथौड़ा के राजा पृथ्वीराज राय, शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी, स्वामी राजा, जौनपुर के मुहम्मद शाह, सिकंदर लोधी द्वितीय, बाबर, शेरशाह सूरी, हुमायूं

प्रसिद्ध चुनार दुर्ग के पीछे स्थित गंगा नदी के पास स्थापित मंदिर के प्रति श्रद्धालुओं की है विशेष आस्था।

ब्रिटिश हुकूमत के पहले गवर्नर वॉरेन हेस्टिंगस का घर।

अकबर, अवध के नवाब मिर्जा मुकीम और अवध के ही नवाब शुजाउद्दौला रहे हैं। वहीं, ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से भेजे गए पहले गवर्नर वॉरेन हेस्टिंगस भी यहां रह चुके हैं।

इससे इतर चुनार के किले में स्थित भर्तृनाथ मंदिर के बारे में भी कई तरह की गाथाएं यहां प्रचलित हैं। यहां उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग की ओर से दी गई सूचना के मुताबिक, उक्त मंदिर के संदर्भ में लोक परंपरा है कि द्वापर युग में भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर राजा बलि से तीन पग भूमि का दान मांगा था। उसके बाद उन्होंने त्रिविक्रम रूप धारण कर लिया। फिर उन्होंने तीन पग में धरती, आकाश और पाताल तक नाप डाले। उस समय उनका पहला पग इसी स्थान पर पड़ा था। यही कारण है कि इस दुर्ग को 'चरणाद्रि गढ़' भी कहा जाता है। इस स्थान के बारे में यह भी कहा जाता है कि करीब दो हजार वर्ष से भी पहले उज्जैन के विख्यात सम्राट विक्रमादित्य के छोटे भाई भर्तृनाथ ने संन्यास लेकर इसी स्थान को अपनी तपोस्थली बनाया था। इसकी सूचना पाकर सम्राट विक्रमादित्य ने यहां आकर अपने भाई के लिए एक महल और दुर्ग का निर्माण कराया। आज भी संन्यासी भर्तृनाथ का आशीर्वाद पाने के लिए यहां दूर–दूर से आते हैं। साथ ही, इस महल के संदर्भ में करीब 1300 वर्ष पुराने अभिलेख आदि भी पाए गए हैं जो इसकी महत्ता को बयां करते हैं। यहां पर भक्त अपनी मनौतियों को पूरा करने के लिए

वॉरेन हेस्टिंगस के आवास का कुंआ।

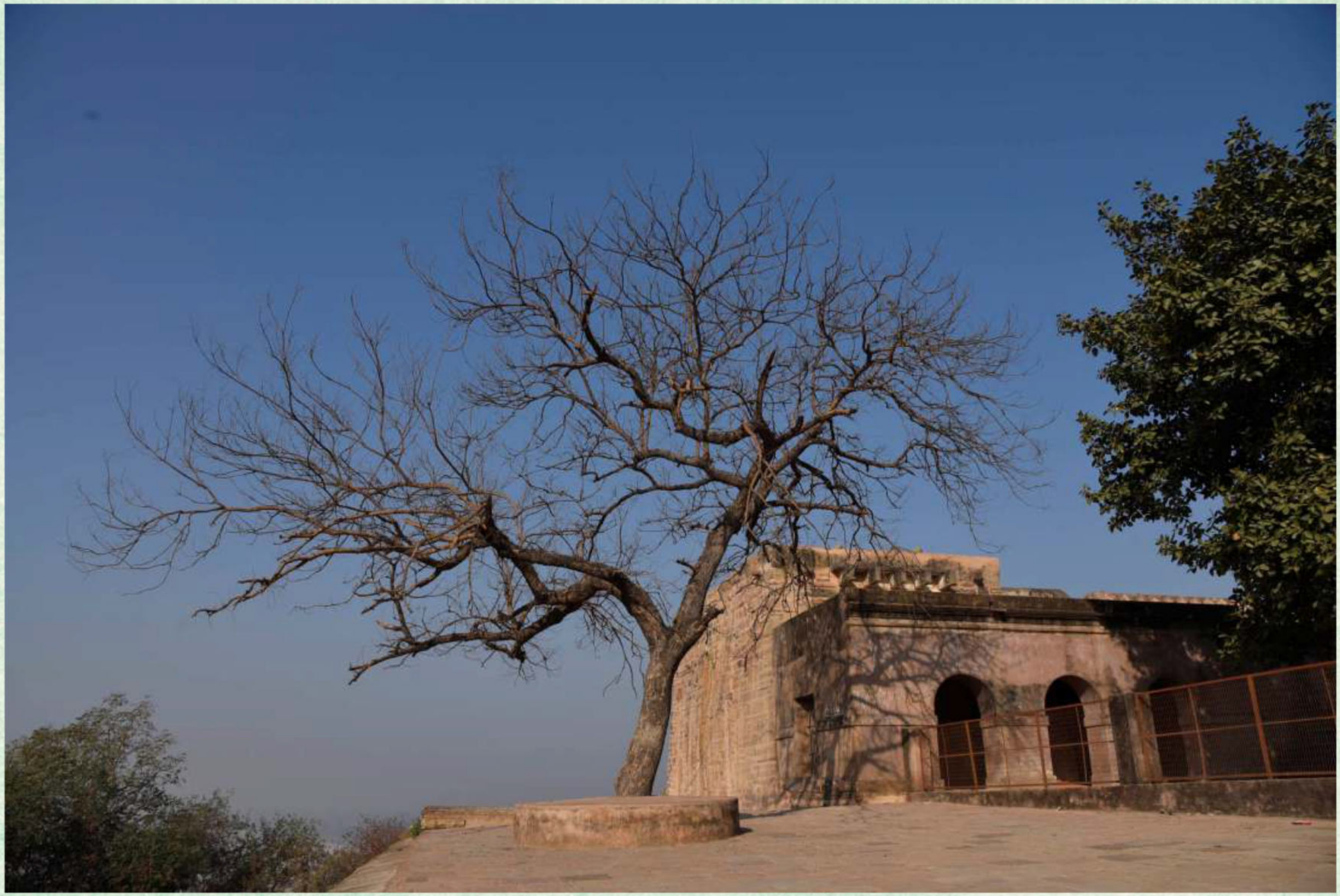

चुनार किला के वातावरण में शांति की अनुभूति होती है।

चुनार दुर्ग के प्रांगण की भव्यता मन में यहां के इतिहास को जानने के लिए उत्सुकता जगाती है।

चुनार दुर्ग के इसी दरबार में राजा अपनी जनता की समस्याओं का निवारण किया करते थे।

सरसों का तेल अर्पित करते हैं। मान्यता है कि यदि सच्ची श्रद्धा भाव से यहां तेल चढ़ाओ तो हर मनचाही मुराद पूरी हो जाती है।

यह भी कहा जाता है कि दिल्ली पति राय पिथौरा का भी इस महल पर आधिपत्य रहा था। उन्होंने अपनी रानी सोनवा के रहने के लिए दुर्ग में सोने का एक महल बनवाया था। जो आज सोनवा मंडप के नाम से जाना जाता है। वहीं, रानी के स्नान के लिए एक 17 मीटर व्यास वाली 200 फीट गहरी बावली का भी निर्माण कराया गया था। इसके अलावा इस दुर्ग की दीवारों से जुड़े कई ऐतिहासिक तथ्य इसकी गौरवगाथा का बखान करते हैं। हालांकि, इस दुर्ग में बने कई मार्गों पर अब सैलानियों के आने–जाने पर रोक लगा दी गई है। फिर भी यहां सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

वहीं, 1722 ई. में इस पर ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना कब्जा जमाकर उसे अपने शस्त्रागार में तब्दील कर दिया थो। साथ ही, सन 1781 ई. में काशी राज चेतसिंह के विद्रोह के समय गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंगस ने यहां कुछ समय के लिए शरण भी ली थी। हेस्टिंगस के आवास के पास आज भी वर्ष 1845 में बनाई गई 'सूर्य घड़ी' को भी देखा जा सकता है। जो सूर्य की रोशनी के अनुसार ही परछाईं के जरिए लोगों को समय बताती है। सन 1791 ई. में ब्रिटिश सेना ने इस किले को अपने विकलांग सैनिकों के

ब्रिटिश हुकूमत के पहले गवर्नर वॉरेन हेसटिंगस के आवास की चहारदीवारी।

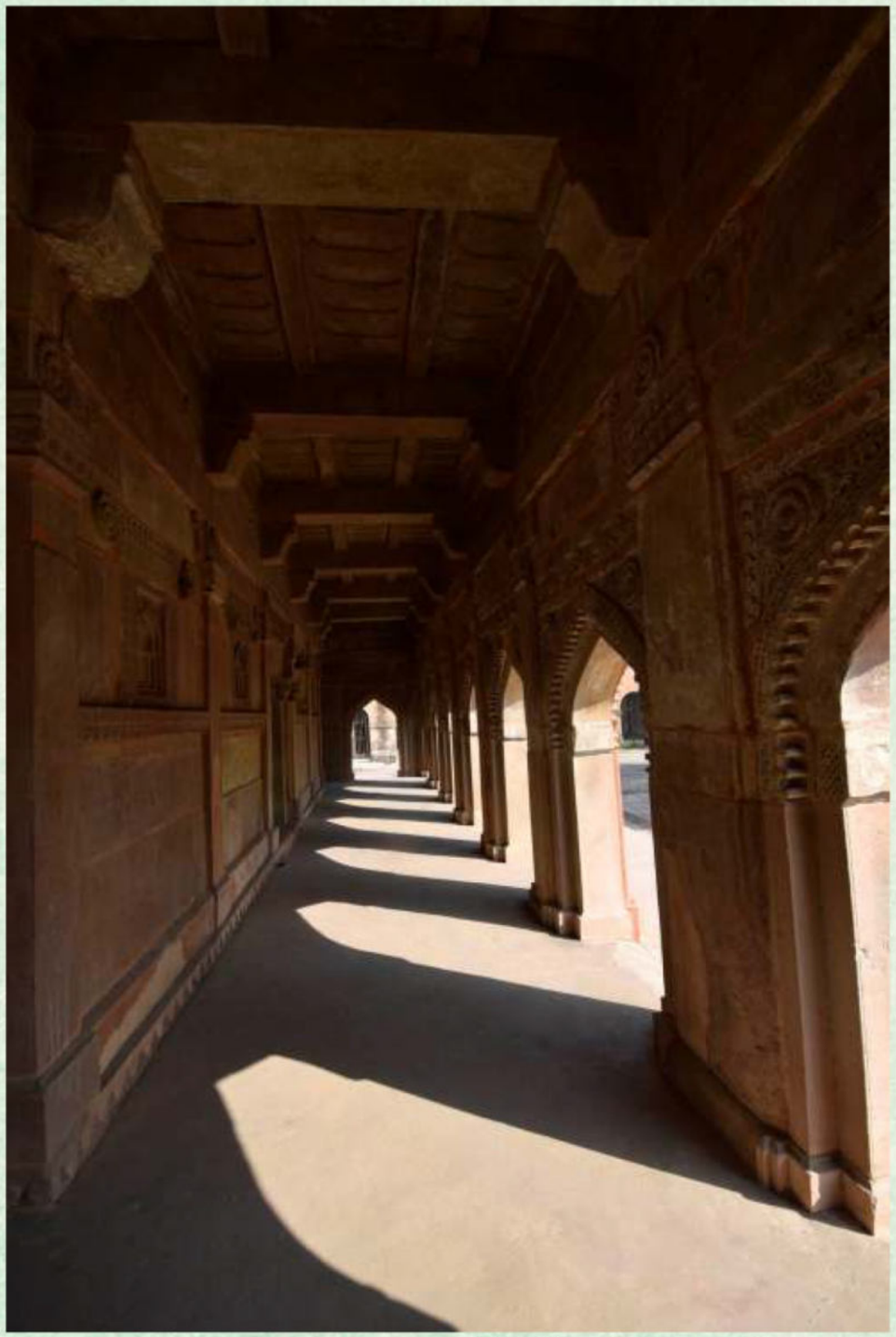

चुनार दुर्ग में निर्मित राजा के दरबार की एक झलक।

चुनार किला में स्थापित राजा विक्रमादित्य के अनुज की भू–समाधि के प्रति लोगों में काफी गहरी आस्था है।

लिए मुख्यालय बना दिया। अंततः वर्ष 1815 से लेकर 19वीं सदी के अंत तक इसे राजकीय बंदियों का कारागार भी बनाया गया। आज भी यहां की सलाखों और फांसी घर से वह खौफ महसूस होता है। गंगा नदी की ओर से करीब 30 मीटर और दक्षिण पूर्व में लगभग 70 मीटर ऊंची इस पहाड़ी की एक खूबी यह भी है कि यह पक्षीप्रेमियों के लिए पसंदीदा जगह है। यहां वर्ष भर दूर–दराज से आकर प्रवासी पक्षी अपना डेरा बना लेते हैं। खासकर, सावन महीने में यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या काफी बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त इस दुर्ग का पश्चिमी द्वार जो जलद्वार के नाम से जाना जाता है उसका निर्माण 1586 ई. में अकबर ने कराया था। यहां की दीवारों पर अरबी भाषा में भी ईश्वरीय शक्तियों का जिक्र किया गया है। जानना रोचक है कि पर्यटन और पौराणिक दोनों ही नजरिए ये यहां की महिमा का बखान स्थानीय लोकगीतों में भी सुनाई देता है। यहां की पत्थर की दीवारों पर उकेरी गई शिल्पकला की जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। हिंदू वास्तुकला के आधार पर निर्मित इस किले की खूबी को यहां निहारने के लिए पर्यटक गंगा नदी में नांव की सवारी भी करते हैं जो इस दुर्ग की विशालता को एक बारगी दर्शाने के साथ ही पर्यटन का रोमांच बढ़ा देती है। दुर्ग के पीछे बनीं कई छोटे–छोटे प्राचीन मंदिरों में भी श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है जो हिंदुओं की वास्तुकला का बेहतरीन नमूना हैं।

चुनार किले में रनिवास की खिड़की।

कड़ी सुरक्षा के बीच से होकर गुजरता था चुनार दुर्ग का रास्ता।

विजयगढ़ का किला

विजयगढ़ दुर्ग मीरजापुर मंडल के अंतर्गत आने वाले सोनभद्र जनपद के रॉबर्ट्सगंज में स्थित है। यह मीरजापुर से 60 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व की दिशा में 12 मील और चुनार से 50 मील दक्षिण–पूर्व की ओर स्थित है। मैदान से लगभग 800 फीट की ऊंचाई पर स्थित इस दुर्ग को देखना ही इतिहास को जीने के जैसा लगता है। यहां जिन दो मार्गों से पहुंचा जा सकता है उनमें से एक मार्ग गहर नदी के पुल से होकर जाता है। इस पुल पर एक अभिलेख लगा है, जिसके अनुसार यह पुल संवत 1929 में राजा बलवंत सिंह ने बनवाया था लेकिन मीरजापुर गजेटियर के अनुमान के अनुसार संभवतः शेरशाह सूरी के समय में इस पुल का निर्माण हुआ होगा।

एक दंतकथा के अनुसार एक समय की बात है दो दानवों के बीच दो स्थानों पर दुर्ग बनाने की शर्त लगी। इनमें से एक विजयगढ़ और दूसरा कंडाकोट था जो बड़हर परगने से पश्चिम दिशा में करीब 12 मील की दूरी पर रॉबर्ट्सगंज के पास स्थित है। कहते हैं कि विजयगढ़ के दानवों का कोई औजार गिर गया जिसे खोजने के लिए उन्होंने जोर की रोशनी जलाई। तेज रोशनी को देखकर कंडाकोट के दानवों ने मान लिया कि विजयगढ़ का किला पूरा बन गया है। इसी के साथ उन्होंने कंडाकोट का कार्य अधूरा छोड़ दिया। आगे चलकर इस दुर्ग पर अगोरी बड़हर के चंदेल राजाओं का कब्जा हो गया। एक समय के बादयह दुर्ग शेरशाह सूरी और बलवंत सिंह के कब्जे में भी रहा। इस बीच इसका निर्माण आगे बढ़ता रहा।

दुर्ग के दरवाजे के पास ही सैयद जैनुलउद्दीन उर्फ मीरा साहब की मजार बनी हुई है। कहा जाता है कि मीरा साहब संत शेरशाह सूरी के साथ आये थे और इन्होंने बिना किसी को नुकसान पहुंचे इस किले पर शेरशाह को कब्जा दिलवा दिया था। वहीं, मीर साहब की समाधी के पास ही एक तालाब है जो मीर सागर के नाम से जाना जाता है और उससे थोड़ी दूरी पर एक और तालाब है जिसे राम सागर के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि राम सागर तालाब की गहराई में खजाना छुपा हुआ है। वहीं, मीर सागर और राम सागर तालाब के बीच राजा बलवंत सिंह का बनवाया शीश महल भी है। स्थानीय लोगों ने इस किले के इर्द–गिर्द की जगह को खजाने पाने के लालच में जगह–जगह से खोद दिया है। हालांकि, इस दुर्ग की खूबसूरती अब भी बरकरार है। सैलानियों को यह जगह काफी पसंद है। यहां की रोचक कहानी जानने के बाद सभी इस दुर्ग को देखते ही रह जाते हैं। स्थानीय लोकगीतों में भी इस किले की खूबसूरती का जिक्र किया गया है। वहीं, लोकगीतों में यहां के राजाओं व दानवों की कहानी का भी वर्णन किया जाता है। मीरजापुर के अंचल में बने इस दुर्ग की चर्चा प्रसिद्ध तिलिस्मी उपन्यास चंद्रकांता में भी किया गया है। बताते हैं कि चंद्रकाता नाटक जब टेलीविजन पर आना शुरू हुआ तो यहां सैलानियों की आमद काफी बढ़ गई थी। वे यहां की रोचकता को देखने और समझने के लिए यहां ठहरने लगे थे।

चुनार दुर्ग का विशाल प्रवेश द्वार।

सलखन फासिल्स पार्क

सलखन फासिल्स पार्क का भव्य नजारा।

मीरजापुर मंडल के तहत आने वाले सोनभद्र जिले के रॉबर्ट्सगंज क्षेत्र स्थित सलखन गांव को विश्व में भी विशेष दर्जा दिया गया है। इसके पीछे की वजह है यहां पाए जाने वाले 150 करोड़ बरस पुराने फासिल्स (जीवाश्म) हैं। फासिल्स का अर्थ होता है, जीवाश्म का चट्टानों में बदल जाना। ऐसा मनुष्य, वनस्पति या जीवों का लंबी अवधि के बाद पत्थरों में तब्दील हो जाने से हो जाता है। इसे प्रकृति का तोहफा ही कहा जाता है। मीरजापुर के लिए यह गर्व की बात है कि सलखन फासिल्स पार्क अमेरिका के ऐलोस्टोन से भी बड़ा है। यहां का फासिल्स प्रीकैम्बियन काल का माना गया है। यह कैमूर वन्य जीव प्रभाग में 25 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। इस क्षेत्र पर निरंतर शोध हो रहे हैं।

घंटाघर

मीरजापुर जनपद में यूं तो घाटों का बसेरा है। मगर इस शहर की शोभा बढ़ाने में यहां स्थित घंटाघर का भी प्रमुख योगदान रहा है। इस शहर का घंटाघर कई मायनों में देश में बने तमाम घंटाघरों से एकदम जुदा है। दरअसल, गौथिक शैली में निर्मित यहां का घंटाघर अपने जनपद की ऐतिहासिकता और पौराणिकता को भी समेटे हुए है। इसकी दीवारों पर मनोहारी शिल्पकला का परिचय देते हुए उसे देश के विभिन्न जगहों पर बने घंटाघरों से बिल्कुल भिन्न कर दिया गया है। इसकी ऊंचाई से शहर का नजारा देखते ही बनता है। यहां आने वाले पर्यटकों को भी पहली ही नजर में यह घंटाघर लुभा देता है। दीवारों पर की गई शानदार कारीगरी का नमूना कुछ यूं है कि एक दिशा में हिंदू परंपराओं का बखान करने की कोशिश की गई है तो दूसरी दीवार पर मुस्लिम धर्म को भी स्थान दिया गया है। तीन मंजिल में बनी 100 फीट ऊंची इस इमारत का निर्माण 31 मई, 1891 में हुआ था। उस समय इसे बनाने में करीब 18 हजार रुपये का खर्च आया था। इस घंटाघर में लगी घड़ी तीन फीट लंबी, पांच इंच मोटी और साढ़े तीन फीट व्यास की है। उक्त घड़ी का निर्माण लंदन में नियर्स स्टेट बैंक कंपनी की ओर से किया गया था। इसकी खासियत यहीं नहीं रुकती। इस घड़ी के घंटे की गूंज 15 किलोमीटर की दूरी तक चारों दिशाओं में सुनाई देती है। साथ ही, इस घड़ी में किसी भी प्रकार की स्प्रिंग आदि का इस्तेमाल नहीं किया गया है। इसके एक सिरे

घंटाघर की अविस्मरणीय एवं मनोहारी वास्तुकला।

पर वजनदार वस्तु लटका है जो गुरुत्वाकर्षण बल से ऊपर से नीचे आता है। इसकी मदद से घिरनी और सुई घुमती है। एक तय समय के बाद जब चेन पूरी तरह से नीचे आ जाता है तो उसे पुनः खींचकर ऊपर लाया जाता है। एक समय तक यहां के समयानुसार ही शहर में सभी सरकारी व व्यावसायिक कार्य सम्पन्न किए जाते थे। लोगों की सहूलियत का ध्यान रखते हुए इसके समय को रेलवे के समय से दस मिनट आगे रखा गया था ताकि लोगों की ट्रेन न छूटने पाए। इसके अतिरिक्त यह जानना भी आवश्यक है कि इस घंटाघर एवं टाउनहॉल का निर्माण यहां की जनता से चंदा लेकर तत्कालीन कलेक्टर ने कराया था।

गुरू दा बाग गुरूद्वारा में हर पंथ के अनुयायियों की विशेष आस्था है।

गुरूद्वारा गुरू दा बाग

मीरजापुर शहर में बहुचर्चित पक्का घाट के समीप बने इस गुरूद्वारा की महत्ता स्वयं गुरू तेगबहादुर एवं गुरू गोविंद सिंह जी हैं। स्थानीय लोगों की मानें तो इस गुरूद्वारा पर गुरू तेगबहादुर जी करीब 353 बरस पहले आकर ठहरे थे। यहां संन्यासियों का भी जमावड़ा लगा रहता है। सिख समुदाय के साथ ही अन्य धर्म के लोगों में भी यहां के प्रति काफी गहरी श्रद्धा है।

सैलानियों में रोचकता जगाता है भारत देश का केंद्र बिंदु यानी आईएसटी।

भारत देश का केंद्र बिंदु (आईएसटी)

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि भारत का मानक समय (इंडियन स्टैंडर्ड टाइम) विंध्याचल से ही लिया जाता है। वर्ष 2007 में वैज्ञानिकों के एक दल ने यहां आकर विंध्याचल के अमरावती चौराहे के पास स्थित स्थल को मानक समय के स्थल के रूप में चिन्हित किया था। सटीक भौगोलिक स्थिति के खोजकर्ता एसपीएसीई (साइज पॉल्युराइजेशन एसोसिएशन ऑफ कम्यूनिकेट्स एंड एजूकेशन) ने भी इस तथ्य पर मुहर लगाई है। जिला प्रशासन की ओर से सुंदरीकरण करते हुए इस स्थल के महत्व को बताने वाला बोर्ड लगवाया गया है। इस बोर्ड पर सूर्य एवं पृथ्वी की दूरी तथा व्यास आदि सहित भारतीय आध्यात्मिक जगत में इस स्थान के महत्व को दर्शाया गया है। इस विंध्य धरा को मां बिंदुवासिनी का दरबार भी कहते हैं। कहते हैं कि महारानी मां बिंदुवासिनी अपनी संपूर्ण कलाओं के साथ यहां पर विद्यमान हैं। बिंदु के बिना एक छोटी रेखा भी नहीं खींची जा सकती है और मां बिंदुवासिनी की कृपा के बिना सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। मान्यता है कि रावण भी अपनी ज्योतिषीय गणना के लिए समय यहीं से तय किया करता था। यही नहीं रावण ने यहां मां के मंदिर के समीप शिवलिंग की स्थापना भी की थी, जिसे बिंदेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। बता दें कि यह बोर्ड इलाहाबाद–मीरजापुर मार्ग पर विंध्यवासिनी मंदिर से दक्षिण दिशा की ओर अमरावती चौराहे पर स्थित है जो सैलानियों का सेल्फी प्वाइंट भी है। यह स्थान विंध्य क्षेत्र की त्रिकोण यात्रा के अंतर्गत आता है।

कंतित शरीफ की मजार पर जायरीन अपनी दिक्कतें चिट्ठी में लिखकर बांध जाते हैं।

कंतित शरीफ

माता विंध्यवासिनी धाम से लगभग एक किलोमीटर दूर कंतित शरीफ मजार स्थित है। यह मजार साम्प्रदायिक सद्भावना के प्रतीक हजरत ख्वाजा इस्माइल चिश्ती अजमेर शरीफ वाले ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के भांजे की है। इस स्थान का महत्व भी अजमेर शरीफ के समतुल्य बताया जाता है। ऐसी धारणा है कि यहां पर लोग अपनी समस्याएं एक चिट्ठी में लिखकर मजार के चारों ओर बांध जाते हैं। कुछ दिनों में ही लोगों की दिक्कत कंतित शरीफ की मदद से खत्म हो जाती है। यहां पर भी सालाना उर्स आदि का इंतजाम होता है। दूर–दूर से जायरीन यहां आकर अपनी पीड़ा दूर करने की गुहार लगाते हैं। इस मजार पर हिंदू और मुस्लिम दोनों ही सम्प्रदाय के लोग सजदा करने आते हैं। यहां की एक और खूबी है नारंगी रंग की नान खटाई, जो यहां पर बहुतायत मात्रा में बेची और खाई जाती है।

पक्की सराय शीतला कूप के निर्माण की खूबसूरती आज भी मन मोह लेती है।

पक्की सराय शीतला कूप

इस कूप का निर्माण वर्ष 1851 में पं. शीतला प्रसाद उपाध्याय ने कराया था। इसका निर्माण अष्टकोणीय आकार में किया गया है। इसमें से एक साथ सोलह लोगों के लिए पानी निकालने के लिए गरारी लगाई गई थी। विंध्यवासिनी माता के भक्तों के आने पर उनके ठहरने के लिए इसकी नींव रखी गई थी। इसके बीस फीट लंबे आठों स्तंभों पर विशेष तरह की शिल्पकारी की गई है। जनपद के लिए यह कूप एक संरक्षणीय शोभा है। आज भी पर्यटकों को यह कूप लुभाता है।

मीरजापुर के विभिन्न जंगलों में स्थित पहाड़ों पर आज भी जीवंत हैं आदिमानवों के बनाए भित्ती चित्र।

आदिवासी भित्तीचित्र

विंध्याचल और कैमूर वन क्षेत्र में करीब 250 आदिवासी भित्तीचित्र पाए जाते हैं। पहाड़ों और गुफाओं में आदिमानव काल की बनाई गई इन तस्वीरों को देखने के लिए सैलानियों का आना यहां रोज की बात है। मीरजापुर मंडल के तहत सोनभद्र जनपद के रॉबर्ट्सगंज क्षेत्र से करीब आठ किलोमीटर दूर पंचमुखी गुफा, चुर्क के करीब कौवा खोह, लखनिया घाट सहित मउ कलन गांव के लखमा गुफा में कई प्रकार के आदिवासी भित्तीचित्र हैं जो यहां की उपलब्धियों के साथ ही रोचकता में चार चांद लगाते हैं।

मीरजापुर के घाट पर हर रंग देखने को मिलता है। कहीं श्रद्धा, कहीं रोमांच और कहीं चंचल बचपन से मुलाकात हो जाती है।

कजली महोत्सव / चैती महोत्सव

मीरजापुर जनपद की एक खूबी यहां का कजली गान है। यह एक विशेष तरह की गायिकी है जो अब देशभर में गाई जाती है। हालांकि, इस कजली को कब से गाया जा रहा है, यह कोई नहीं जानता। सावन के महीने में आयोजित किए जाने वाले इस कजली गायन का विशेष महत्व है। इस दौरान जनपद में कजली महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि कंतित के राजा की लड़की का नाम कजरी था। वह अपने पति से बेहद प्यार करती थी। जो उस समय उनसे अलग कर दी गयी थी। उनकी याद में वह प्यार के गीत गाती थी, उसे ही मीरजापुर के लोग कजरी के नाम से याद करते हैं। वे उन्हीं की याद में कजरी (कजली) महोत्सव मनाते हैं। इसे चैती महोत्सव के नाम से भी जाना जाता है।

मीरजापुर शहर स्थित शहीद उद्यान में विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों को दी गई है श्रद्धांजलि।

शहीद उद्यान

देवी–देवताओं के दर्शन के लिए प्रसिद्ध मीरजापुर जनपद में देश को आजादी दिलाने वाले शहीदों को भी उच्च सम्मान दिया गया है। यहां शहर के मध्य में नारघाट के समीप ही शहीद उद्यान का निर्माण किया गया है। आकर्षक हरियाली की उचित व्यवस्था के बीच यहां स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के स्मारक बनवाए गए हैं। प्रत्येक स्मारक पर उक्त स्वतंत्रता सेनानी की जीवनी उकेरी गई है। इस जगह से नारघाट को जोड़ने वाले मार्ग का भी निर्माण कराया गया है। वहीं, इस जगह पर पर्यटकों के लिए मुफ्त में पुस्तकालय भी संचालित किया जाता है जहां हर विषय पर किताबें मुहैया कराई गई हैं। यह स्थान पक्की सराय कुंआ के पास ही स्थित है। इसके आस–पास पीतल के बर्तनों का निर्माण किया जाता है। वहीं, शहर का बड़ा बाजार भी इसी जगह के इर्द–गिर्द बनाया गया है। शहर के मध्य क्षेत्र में स्थित स्थान पर आकर मन में भारत की आजादी का गौरवपूर्ण इतिहास जाग उठता है।

ओझला पुल की खूबसूरती से नजर ही नहीं हटती है।

ओझला पुल

दिल्ली–कोलकाता मार्ग के बीच पूण्यजला नदी पर बना ऐतिहासिक ओझला पुल मीरजापुर जनपद की एक और उपलब्धि है। इसकी संरचना रोचक एवं दर्शनीय है। जनपद मुख्यालय से विंध्याचल धाम की ओर जाते समय यह पुल नजर आता है। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस पुल का निर्माण वर्ष 1850 में रूई एवं लाख के एक व्यापारी महंत परशुराम गिरी ने कराया था। कहा जाता है कि उस समय में पहले सड़क और रेल की उचित व्यवस्था नहीं थी। ऐसे में व्यापार करने में लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। सभी को व्यापार करने के लिए जलमार्ग का सहारा लेना पड़ता था। इसी समस्या के समाधान के लिए महंत परशुराम ने अपनी रूई की एक दिन की कमाई से इस पुल का निर्माण कराया था। इसकी मजबूती का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज भी यह पुल मजबूती से खड़ा है। चार मंजिल के इस पुल में राहगीरों के ठहरने के लिए भी इंतजाम किए गए हैं। इसमें लगे पत्थरों पर की गई नक्काशी भी पर्यटकों का मन मोह लेती है।

खादिम दरगाह शरीफ की भव्य मजार।

खादिम दरगाह शरीफ की मजार पर की गई सुंदर नक्काशी की एक झलक।

खादिम दरगाह शरीफ, हजरत बाबा कासिम सुलेमानी

चुनार के किले से बाहर निकलते ही सामने नजर पड़ती है हजरत बाबा कासिम सुलेमानी की खादिम दरगाह शरीफ पर। इस दरगाह शरीफ पर लोगों की गहरी आस्था है। हर धर्म के लोग यहां सजदा करने लिये आते हैं। इस दरगाह शरीफ का ऐतिहासिक महत्व भी बताया जाता है। यहां बने दो रौजा शरीफों पर सजदा करने के लिए हर रोज बड़ी संख्या में जायरीन आते हैं। ऐसा दावा है कि यहां बने हजरत बाबा कासिम सुलेमानी का रौजा शरीफ करीब 400 बरस पुराना है। वहीं, यहां बने नक्काशीदार दरवाजे की खूबसूरती पहली ही नजर में पर्यटकों को लुभा जाती है। बताया जाता है कि यह दरवाजा करीब 350 वर्ष पुराना है। यहां की सुंदरता में अहम चीज है बारीकी से पत्थर काटकर बनाई गई जाली वाली नक्काशी। दरगाह शरीफ के भीतर जगह–जगह पत्थरों पर ऐसी नक्काशी की गई है जो आज भी एकदम नवीन सी लगती है। इसके अलावा यहां बने गुंबद के बारे में दावा किया जाता है कि वह अपने समय में विश्व की सबसे ऊंची तीन गुंबदों में से एक थी। इस दरगाह शरीफ पर हर साल होली के त्योहार के बाद लगातार पांच सप्ताह तक उर्स का आयोजन किया जाता है। इस उर्स में देशभर से अकीदतमंदों का आना होता है। यहां से गंगा नदी और चुनार का किला देखने पर काफी रमणीय नजर आता है।

जिस तरह इन दोनों रौजों के प्रति श्रद्धालुओं में जो मान्यता है उसे बयां नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह यहां की दीवारों पर की गई नक्काषी की खूबसूरती को अनदेखा नहीं कर सकते। पत्थर की कटाई में बारीकी से जो कारीगरी की गई है उसे देख आज भी लोग दंग रह जाते हैं। हर दीवार पर अलग तरह की नक्काषी की गई है जो आंखों को राहत महसूस कराती है।

हजरत बाबा कासिम सुलेमानी की मजार पर चादर चढ़ाने के लिये देशभर से जायरीन आते रहते हैं।

वीर लोरिक

वीर लोरिक पत्थर का विशाल नजारा।

वीर लोरिक पत्थर

पूर्वी उत्तर प्रदेश की अहीर जाति में वीर लोरिक के नाम से दंतकथाएं गाई जाती हैं। दरअसल, लोरिकायन या लोरिक की कथा भोजपुरी भाषा की एक नीति कथा है। इसे अहीर जाति की रामायण का दर्जा दिया जाता है। लोक गाथाओं के अनुसार लोरिकी या लोरिकायन गाथा के अनुसार वीर लोरिक का जन्म पांचवीं शताब्दी में ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के गउरा गांव में हुआ था। कुछ गाथाओं में इनका जीवन काल बारहवीं सदी से माना जाता है। इसी क्रम में मीरजापुर के कैमूर वन्य जीव प्रभाग के रास्ते में रॉबर्ट्सगंज में सलखन से करीब तीन किलोमीटर पूर्व मुख्य मार्ग के किनारे एक बड़ा सा पत्थर दो भाग में बराबरी से कटा नजर आता है। लोरिकायन मान्यता के तहत कहा जाता है कि वीर लोरिक ने तत्कालीन समय में सोनभद्र जिले के अगोरी राजा के आतंक से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए अगोरी के अहिर जाति के क्षत्रिय महरा की बेटी देवी स्वरूपा मंजरी से विवाह करने की इच्छा जताई। इसके लिए उन्होंने कड़ा युद्ध जीतने के बाद मंजरी से विवाह कर लिया। इसके बाद वह अपनी पत्नी का डोला लेकर इसी रास्ते से अपने घर बलिया जा रहे थे। उसी बीच रानी मंजरी के कहने पर उन्होंने अपने शौर्य के प्रतीक में इस विशाल पत्थर को अपनी सिद्ध तलवार 'बिजुरिया' से एक ही वार में दो भाग में बांट दिया था। इस पत्थर पर देवी मंजरी ने सिंदूर लगाकर अपने सुहाग का प्रतीक चिन्ह दिया था जो आज भी लग्न के समय चमकता है।

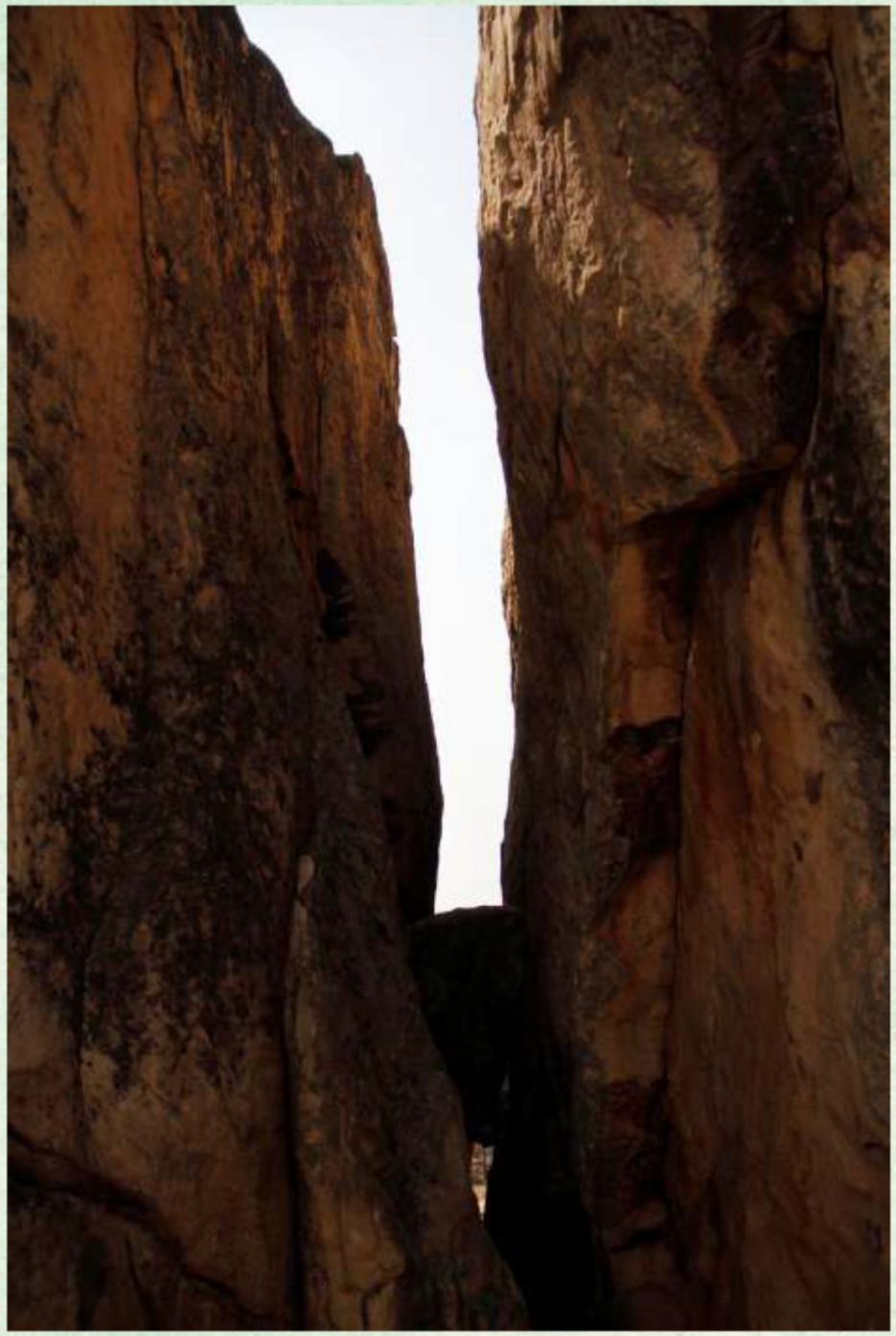

लोरिकायन के मुताबिक, वीर लोरिक ने इस पत्थर को अपनी तलवार के एक ही वार से दो भाग में बांट दिया था।

वीर लोरिक पत्थर को देखने लिए सैलानियों में एक रोमांच दिखता है।

उम्दा कारीगरी

fdlh Hkh LFkku dk Hkze.k rc rd v/kwjk gS tc rd fd ge ogka ds vkthfodk ds lk/kuksa dks Hkh u ns[k ysaA ehjtkiqj ds lQj esa lcls vf/kd iMko ij vkrh gS ;gka dh mEnk dkjhxjh ftls izns'k gh ugha ns'kHkj esa ljkguk feyrh gS---

चुनार का लाल पत्थर

मीरजापुर जनपद पर मां विंध्यवासिनी के आशीर्वाद स्वरूप चुनार का पत्थर भी है। यहां के पत्थर की मांग पूरे देश में रहती है। इसकी मजबूती और सुनहरा रंग काफी पसंद किया जाता है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ सहित नोएडा में बसपा सरकार के कार्यकाल में बनाए गए सभी स्मारक और संरचना इन्हीं चुनार के पत्थरों से निर्मित किए गए हैं। मूर्ति बनाने का काम करने वाले दिनेश सोनकर बताते हैं कि उनका खानदानी पेशा पत्थरों की कटाई कर मूर्तियां आदि बनाने का रहा है। उन्होंने बताया कि यहां बड़े–बड़े पहाड़ों को काटकर पत्थरों को तराशा जाता है। वे कहते हैं कि चुनार में एक बड़ी आबादी इस काम से जुड़ी हुई है। पर्यटकों को भी यहां के पत्थरों के बारे में जानकारी एकत्र करना काफी पसंद है।

पूरे देश में चुनार के लाल पत्थरों की मांग हमेशा बनी रहती है।

मीरजापुर के कुछ क्षेत्रों में हर घर में किया जाता है कालीन का निर्माण।

कालीन उद्योग

मीरजापुर में कालीन का कारोबार कई परिवारों का रोजगार है। यहां के बने कालीनों की मजबूती और खूबसूरती की चर्चा देशभर में होती है। यहां वर्षभर कालीन की बुनाई की जाती है। यहां के बने कालीनों की बाजार में इतनी मांग है कि आबादी का एक बड़ा हिस्सा इस हस्तकला से जुड़कर स्वयं सहित दूजों को रोजगार मुहैया करा रहा है। बंगाल और बिहार के बहुत से लोग कालीन के इस रोजगार से जुड़े हुए हैं। कुछ जगहों पर तो घर–घर में कालीन की बुनाई की जाती है। वहीं, मीरजापुर मंडल के भदोही जनपद के कालीनों की मांग तो विदेशों में भी होती है।

दरी की बुनाई करते कारीगर।

लाठी

मीरजापुर की सैर करने वाले सैलानी यहां की लाठी जरूर खरीदते हैं। दरअसल, यहां की लाठी को बहुत ही मजबूत माना जाता है। लोग इसे अपने चलने का सहारा बनाने के साथ ही उसे शौक से भी रखते हैं। लाठी बनाने का रोजगार भी यहां के लोगों की विशेषता बन चुका है।

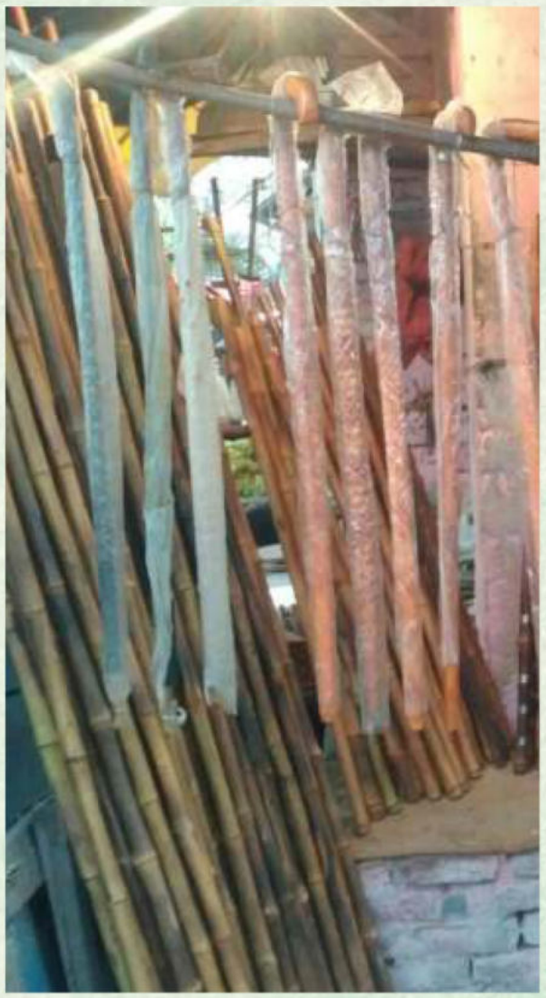

पीतल उद्योग

मीरजापुर जनपद के धार्मिक महत्व के साथ ही यहां के पीतल के बर्तन भी देशभर में पसंद किए जाते हैं। कसेरा समुदाय लोगों ने अपनी इस पुस्तैनी कला को आज भी जिंदा रख रखा है। मीरजापुर शहर के बीचोबीच बसे कसेरा समुदाय के लोगों ने अपनी इस कला के जरिए आस–पास के दर्जनों गांव के लोगों को रोजगार दे रखा

है। पीतल के विभिन्न प्रकार के बर्तनों को बनाकर यहां करीब अस्सी हजार लोगों की आबादी अपना पेट पाल रही है। वहीं, वाराणसी आने वाले सैलानियों को भी यहां के बने पीतल के बर्तन आदि काफी पसंद हैं। यहां पीतल की कारीगरी को देखना किसी इतिहास को करीने से देखने जैसा है। पीतल का यह काम पक्की सराय इमारत के इर्द–गिर्द किया जाता है। इन गलियों के हर घर में पीतल के बर्तनों का निर्माण होता रहता है। पर्व और लग्न के समय यहां कारीगरों की संख्या बढ़ जाती है।

पूर्ण संतृप्ति

उत्तर प्रदेश में वाराणसी से चंद घंटे की दूरी पर स्थित मीरजापुर शहर में सैलानियों को पूर्ण संतृप्ति मिलती है। कलकल करती और निरंतर बहती जलधाराओं का विशेष संगम यहां आने वालों का मन मोह लेती हैं। चट्टानों से रिसते मीठे पानी का स्वाद और विंध्य क्षेत्र में बसे लोगों के स्वागत का रिवाज यहां की प्रमुखताओं में चार चांद लगाता है। चंद लफ्जों में यह कहें कि यदि इस क्षेत्र पर विंध्यवासिनी माता की विशेष पा बरसती है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी....

Regd. Office: Jagran Prakashan Ltd. Jagran Building, 2 Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005.
Tel.: 0512 2216161/2/3 • Website: www.jagran.com • www.jctb.in • www.jplcorp.in